दुग्ध सरिता

डेरी विकास का नया आयाम, नया नाम

सितंबर – अक्टूबर, 2022

विश्व डेरी शिखर सम्मेलन-2022

प्रधान मंत्री द्वारा उद्घाटन

"भारत का डेरी सहकारिता मॉडल विश्व में अनूठा है, इससे गरीब देश बहुत कुछ सीख सकते हैं"

- प्रधान मंत्री

केंद्रीय मंत्रियों की भागीदारी और विचार प्रस्तुति

भारत @ 2047 - विश्व का डेरी स्रोत

www.indairyasso.org

DeLaval

फार्म मैनेजमेंट अब बस एक क्लिक, बेहतर फार्मिंग के लिए बेहतरीन तकनीक

Decisions Start Here

DeLaval VMS™V300

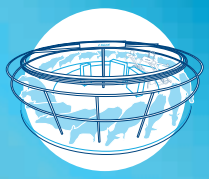
DeLaval Automatic Milking Rotary System AMR™

Sort Gates

DeLaval Parlour Systems

DeLaval Rotary Systems

Activity Monitoring

DelPro™ Companion

Milk Meters

Online Cell Counter OCC

DeLaval Herd Navigator™

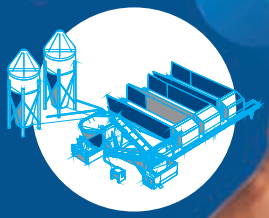
DeLaval Optimat™

DelPro™ Interactive Data Display

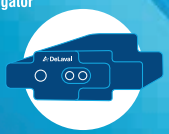
Body Condition Scoring Camera BCS

डलवाल DelPro™ फार्म मैनेजमेंट सॉफ्टवेअर

Maharashtra (H.O.) :

DeLaval Private Limited
A-3, Abhimanshree Society,
Pashan Road, Pune - 411008, India.
Tel. +91 8600 800 888

Product Information : marketing.india@delaval.com
Website : www.delaval.in
www.facebook.com/DeLavalIndia

We live milk

दुग्ध सरिता

डेरी विकास का नया आयाम, नया नाम

इंडियन डेरी एसोसिएशन द्वारा प्रकाशित द्विमासिक पत्रिका

वर्ष : 6 अंक : 5 सितंबर–अक्टूबर, 2022

सम्पादकीय मंडल

अध्यक्ष

डॉ. आर. एस. सोढ़ी
अध्यक्ष, इंडियन डेरी एसोसिएशन

सदस्य

डॉ. रामेश्वर सिंह
कुलपति
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
पटना

डॉ. ओमवीर सिंह
उप प्रबंध निदेशक
मदर डेरी फ्रूट्स एंड वेजीटेबल्स
प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली

श्री सुधीर कुमार सिंह
प्रबंध निदेशक
झारखंड दुग्ध उत्पादक सहकारी
महासंघ लिमिटेड, रांची

श्री किरीट मेहता
प्रबंध निदेशक
भारत डेरी, कोल्हापुर

डॉ. बी.एस. बैनीवाल
पूर्व प्राध्यापक
लाला लाजपतराय पशुचिकित्सा
एवं पशु विज्ञान
विश्वविद्यालय, हिसार

डॉ. अर्चना वर्मा
प्रधान वैज्ञानिक
राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान
करनाल

डॉ. अनूप कालरा
कार्यकारी निदेशक
आयुर्वेट लिमिटेड, गाजियाबाद

प्रकाशक
श्री ज्ञान प्रकाश वर्मा

संपादक
डॉ. जगदीप सक्सेना

विज्ञापन व व्यवसाय
श्री नरेन्द्र कुमार पांडे

संपर्क

इंडियन डेरी एसोसिएशन, आईडीए हाउस, सैक्टर–IV,
आर. के. पुरम, नई दिल्ली-110022
फोन : 011-26179781
ईमेल : dsarita.ida@gmail.com

विषय सूची

अध्यक्ष की बात, आपके साथ — 6
भारत @ 2047–विश्व का डेरी स्रोत
डॉ. आर. एस. सोढ़ी

रिपोर्ट — 9
अंतरराष्ट्रीय डेरी महासंघ का विश्व डेरी शिखर सम्मेलन–2022
जगदीप सक्सेना

नवीन — 16
ऑनलाइन वेटरनरी क्लीनिक द्वारा पशु उपचार
रूपसी तिवारी, अनुज चौहान तथा त्रिवेणी दत्त

प्रश्नोत्तरी — 24
गोपशुओं में कृत्रिम गर्भाधान व प्रजनन
संकलनः संपादकीय डेस्क

पोषण — 29
घोड़ी का दूध मानव स्वास्थ्य के लिए उत्तम
अमित कुमार सिंह, संजीत कुमार एवं संदीप कुमार

सलाह — 33
बछड़े के जन्म के बाद पहले 24 घंटे
संकलनः संपादकीय डेस्क

उपाय — 34
स्वच्छ दूध उत्पादन से उत्तम डेरी उत्पाद
डॉ. राजेंद्र सिंह

कहानी — 36
रामा
सुभद्रा कुमारी चौहान

डिस्क्लेमर

लेखकों द्वारा व्यक्त विचारों, जानकारियों, आंकड़ों आदि के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं, उनसे आईडीए की सहमति आवश्यक नहीं है। पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा अन्य सामग्री का कॉपीराइट अधिकार आईडीए के पास सुरक्षित है। इन्हें पुनः प्रकाशित करने के लिए प्रकाशक की अनुमति अनिवार्य है।

मूल्य
एक प्रति : 75 रु.

इंडियन डेरी एसोसिएशन

इंडियन डेरी एसोसिएशन (आईडीए) भारत के डेरी सेक्टर का प्रतिनिधित्व करने वाली शीर्ष संस्था है। सन् 1948 में गठित इस संस्था ने देश को विश्व में सर्वाधिक दूध उत्पादन के शिखर तक पहुंचाने में अग्रणी भूमिका निभायी है। वर्तमान में इसके 3,000 से अधिक सदस्य हैं, जिनमें वैज्ञानिक, विशेषज्ञ, डेरी उद्यमी, डेरी किसान, पशुपालक और डेरी के विभिन्न पहलुओं पर कार्य करने वाले डेरी कर्मी शामिल हैं। आईडीए द्वारा राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय स्तर पर ज्वलंत विषयों पर सम्मेलन, संगोष्ठियां एवं कार्यशालाएं आयोजित की जाती हैं, जिसकी सिफारिशों पर भारत सरकार द्वारा गंभीरता से विचार किया जाता है। आईडीए का मुख्यालय नई दिल्ली में है तथा इसके चार क्षेत्रीय कार्यालय क्रमशः उत्तर, दक्षिण, पूर्व व पश्चिम में कार्यरत हैं। साथ अनेक राज्यों में इसके चैप्टर भी सक्रियता से कार्य कर रहे हैं। डेरी सैक्टर के सभी संबंधितों तक शोध परक व तकनीकी जानकारी और उपयोगी सूचनाओं के प्रसार के लिए आईडीए द्वारा पिछले लगभग सात दशकों से 'इंडियन जर्नल ऑफ डेरी साइंस' और 'इंडियन डेरीमैन' का प्रकाशन किया जा रहा है। ये दोनों ही पत्रिकाएं राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित हैं। द्विमासिक हिन्दी पत्रिका 'दुग्ध सरिता' का प्रकाशन आईडीए की नयी पहल है।

आईडीए के पदाधिकारी

अध्यक्षः डॉ. आर. एस. सोढ़ी

उपाध्यक्षः श्री ए.के. खोसला और श्री अरुण पाटिल

सदस्य

चयनितः श्री सी.पी. चार्ल्स, डॉ. गीता पटेल, श्री रामचंद्र चौधरी, श्री चेतन अरुण नारके, श्री राजेश गजानन लेले, श्री अनिल बर्मन, डॉ. बिमलेश मान, डॉ. बिकाश चंद्र घोष, श्री संजीव सिन्हा, श्री बी.वी.के. रेड्डी, एवरेस्ट इंस्ट्रूमेंट्स प्राइवेट लिमिटेड और श्री अमरदीप सिंह चड्ढा **नामित सदस्यः** डॉ. जी.एस. राजौरिया, श्री एस.एस.मान, श्री सुधीर कुमार सिंह, दक्षिण क्षेत्र के प्रतिनिधि, पश्चिम क्षेत्र के प्रतिनिधि, श्रीमती वर्षा जोशी, डॉ. धीर सिंह और श्री मीनेश शाह

मुख्य कार्यालयः इंडियन डेरी एसोसिएशन, आईडीए भवन, सेक्टर– IV, आर.के. पुरम, नई दिल्ली– 110022, टेलीफोनः 26170781, 26165237, 26165355, ई–मेलः idahq@rediffmail.com, www.indairyasso.org

क्षेत्रीय, प्रांतीय एवं स्थानीय शाखाएं

दक्षिणी क्षेत्रः श्री सी.पी. चार्ल्स, अध्यक्ष, आईडीए भवन, एनडीआरआई परिसर, अडुगोडी, बेंगलुरू–560 030, फोन न. 080–25710661, फैक्स–080–25710161. **पश्चिम क्षेत्रः** श्री अरूण पाटिल, अध्यक्ष; ए–501, डाइनैस्टी बिजनेस पार्क, अंधेरी–कुर्ला रोड, अंधेरी (पूर्व), मुंबई–400059 ई–मेलः arunpatilida@gmail.com/secretary@idawz.org फोन न. 91 22 49784009 **उत्तरी क्षेत्रः** श्री एस.एस. मान, अध्यक्ष; आईडीए हाउस, सेक्टर IV, आर.के. पुरम, नई दिल्ली–110 022, फोन– 011–26170781, 26165355. **पूर्वी क्षेत्रः** श्री सुधीर कुमार सिंह, अध्यक्ष, c/o एनडीडीबी, ब्लॉक–डी, डी.के. सेक्टर–II, साल्ट लेक सिटी, कोलकाता–700 091, फोन– 033–23591884–7. **गुजरात राज्य चैप्टरः** डॉ. जे. बी. प्रजापति, अध्यक्ष; c/o एसएमसी डेयरी विज्ञान कॉलेज, आणंद कृषि विश्वविद्यालय, आणंद– 388110, गुजरात, ई–मेलः idagscac@gmail.com/jbprajapati@gmail.com **केरल राज्य चैप्टरः** डॉ. एस.एन. राजाकुमार, अध्यक्ष, c/o प्रोफेसर व अध्यक्ष, केवीएएसयू डेरी प्लांट, मन्नुथी, ई–मेलः idakeralachapter@gmail.com **राजस्थान राज्य चैप्टरः** श्री राहुल सक्सेना, अध्यक्ष, c/o केबिन न. 1, मनोरम 2 अम्बेशवर कॉलोनी, श्याम नगर मेट्रो स्टेशन के पास, जयपुर–302019 ई–मेलः idarajchapter@yahoo.com **पंजाब राज्य चैप्टरः** डॉ. बी.एम. महाजन, अध्यक्ष, c/o डेरी विकास विभाग, पंजाब लाइवस्टॉक कॉम्पलैक्स, चौथी मंजिल, आर्मी इंस्टीट्यूट ऑफ लॉ के निकट, सेक्टर–68, मोहाली, फोनः 0172–5027285 / 2217020, ई–मेलः ida.pb@rediffmail.com **बिहार राज्य चैप्टरः** श्री डी.के. श्रीवास्तव, अध्यक्ष, c/o पूर्व प्रबंध निदेशक, मिथिला मिल्क यूनियन, हाउस नं. 16, मंगलम एन्कलेव, बेली रोड, सगुना एसबीआई के पास, पटना–814146 बिहार, ई–मेलः idabihar2019@gmail.com **हरियाणा राज्य चैप्टरः** डॉ. एस.के. कनौजिया, अध्यक्ष, c/o डेरी प्रौद्योगिकी प्रभाग, एनडीआरआई, करनाल–132001 (हरियाणा), फोन : 9896782850, ई–मेलः skkanawjia@rediffmail.com **तमिलनाडु राज्य चैप्टरः** श्री एस रामामूर्ति, अध्यक्ष; c/o डेरी साइंस विभाग, मद्रास पशु चिकित्सा कॉलेज, चेन्नई–600007 **आंध्र प्रदेश राज्य चैप्टरः** प्रो.रवि कुमार श्रीभाष्यम, अध्यक्ष; c/o कॉलेज ऑफ डेयरी टेक्नोलॉजी, श्री वेंकटेश्वर पशु चिकित्सा विश्वविद्यालय, तिरुपति–517502 ई–मेलः idaap2020@gmail.com **पूर्वी यूपी स्थानीय चैप्टरः** प्रोफेसर डी.सी. राय, अध्यक्ष; प्रोफेसर, डेरी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, प्रमुख, पशुचिकित्सा एवं प्रौद्योगिकी, कृषि विज्ञान संस्थान, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी–221005, फोनः 0542–2368009, ई–मेलः dcrai@bhu.ac.in **पश्चिमी यूपी स्थानीय चैप्टरः** श्री विजेन्द्र अग्रवाल, अध्यक्ष; c/o कैलाश डेरी लिमिटेड, रिठानी, दिल्ली रोड, मेरठ फोनः 9837019596 ई–मेलः vijendraagarwal2012@gmail.com **झारखण्ड स्थानीय चैप्टरः** श्री पवन कुमार मारवाह, अध्यक्ष; c/o झारखण्ड दुग्ध महासंघ, एफटीसी कॉम्प्लेक्स, धुर्वा सेक्टर–2, रांची, झारखण्ड–834004 ई–मेलः jharkhandida@gmail.com

इंडियन डेरी एसोसिएशन

संस्थागत सदस्य

बेनीफैक्टर सदस्य

एग्रीकल्चर स्किल कौंसिल ऑफ इंडिया, गुरूग्राम (हरियाणा)

अजमेर जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड, अजमेर (राजस्थान)

अमृत फ्रेश प्राइवेट लिमिटेड, कोलकाता (पश्चिम बंगाल)

अपोलो एनीमल मेडिकल ग्रुप ट्रस्ट, जयपुर (राजस्थान)

आयुर्वेट लिमिटेड (दिल्ली)

बीएआईफ डेवलपमेंट रिसर्च फाउंडेशन, पुणे (महाराष्ट्र)

बड़ौदा जिला सहकारिता दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, वडोदरा (गुजरात)

बेनी इमपेक्स प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)

बेलगावी जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक समिति यूनियन लि., बेलगावी (कर्नाटक)

भीलवाड़ा जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ, भीलवाड़ा (राजस्थान)

बिहार राज्य दुग्ध सहकारी संघ लिमिटेड, पटना (बिहार)

बिमल इंडस्ट्रीज, यमुना नगर (हरियाणा)

बोवियन हेल्थकेयर प्राइवेट लिमिटेड, फरीदाबाद (हरियाणा)

ब्रिटानिया डेयरी प्राइवेट लिमिटेड, कोलकाता (पश्चिम बंगाल)

क्रीमी फूड्स लिमिटेड (दिल्ली)

सीपी मिल्क एंड फूड प्रोडक्ट्स प्राइवेट लिमिटेड, लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

डेयरी विकास विभाग टीवीएम, तिरुवनंतपुरम (केरल)

डोडला डेरी लिमिटेड, हैदराबाद (तैलंगाना)

ईस्ट खासी हिल्स जिला सहकारी दुग्ध संघ लिमिटेड (मेघालय)

एवरेस्ट इंस्ट्रूमेंट्स प्राइवेट लिमिटेड, अहमदाबाद (गुजरात)

फार्मगेट एग्रो मिल्क प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)

किसान प्रशिक्षण केन्द्र, डेयरी विकास, रांची (झारखंड)

खाद्य और बायोटेक इंजीनियर्स (I) प्राइवेट लिमिटेड, पलवल (हरियाणा)

फाउंडेशन फॉर इकोलॉजिकल सिक्योरिटी, आणंद (गुजरात)

फोंटेरा इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)

जी आर बी. डेरी फूड्स प्राइवेट लिमिटेड, होसुर (तमिलनाडु)

गाँधीनगर जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, गाँधीनगर (गुजरात)

जीईए प्रौसेस इंजीनियरिंग (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड, वडोदरा (गुजरात)

गोविंद दुग्ध और दुग्ध उत्पाद लिमिटेड, सतारा (महाराष्ट्र)

गोमा इंजीनियरिंग प्राइवेट लिमिटेड, ठाणे (महाराष्ट्र)

गुजरात सहकारी दुग्ध विपणन संघ लिमिटेड, आंणद (गुजरात)

हेटसन कृषि उत्पाद लिमिटेड, चेन्नई (तमिलनाडु)

हसन दुग्ध संघ, हसन (कर्नाटक)

हेरिटेज फूड्स लिमिटेड, हैदराबाद (आंध्र प्रदेश)

हिंदुस्तान इक्विपमेंट्स प्राइवेट लिमिटेड, इंदौर (मध्य प्रदेश)

आईडीएमसी लिमिटेड, आणंद (गुजरात)

इग्लू डेयरी सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)

आईटीसी फूड्स, बेंगलुरू, (कर्नाटक)

आईएफएम इलेक्ट्रोनिक इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, कोल्हापुर (महाराष्ट्र)

इंडियन इम्यूनोलौजिकल्स लिमिटेड, (आंध्र प्रदेश)

भारतीय संभार एवं सामग्री प्रबंधन रेल संस्थान (दिल्ली)

जयपुर जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड (राजस्थान)

झारखंड राज्य दुग्ध संघ, रांची (झारखंड)

कान्हा दुग्ध परीक्षण उपकरण प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)

कौस्तुभ जैव–उत्पाद प्राइवेट लिमिटेड, अहमदाबाद (गुजरात)

करीमनगर जिला दुग्ध उत्पादक पारस्परिक सहायता सहकारिता संघ लिमिटेड (आंध्र प्रदेश)

कर्नाटक सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, बेंगलुरू (कर्नाटक)

कीमिन इंडस्ट्रीज़ साउथ एशिया प्राइवेट लिमिटेड, चैन्नई (तमिलनाडु)

केरल डेरी फार्मर्स वैलफेयर फंड बोर्ड (केरल)

खम्बेते कोठारी कैन्स एवं सम्बद्ध उत्पाद प्राइवेट लिमिटेड, जलगांव (महाराष्ट्र)

कोल्हापुर जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (महाराष्ट्र)

कच्छ जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, कच्छ (गुजरात)

लेहुई इंडिया इंजनियरिंग एंड इक्विपमेंट प्राइवेट लिमिटेड, वडोदरा (गुजरात)

मालाबार रीजनल कोऑपरेटिव मिल्क प्रोड्यूसर्स यूनियन लिमिटेड, कोझिकोड (केरल)

मेसे म्यूनकेन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)

मिथिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड (बिहार)

एनसीडीएफआई, आणंद (गुजरात)

मदर डेरी फ्रूट एंड वेजीटेबल प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)

भारतीय खाद्य प्रौद्योगिकी उद्यमशीलता एवं प्रबंधन संस्थान, सोनीपत (हरियाणा)

नियोजेन फूड एंड ऐनीमल सिक्योरिटी (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड, कोच्चि (केरल)

नाऊ टेक्नोलॉजीस प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)

संस्थागत सदस्य

ओराना इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, गुरुग्राम (हरियाणा)

पायस मिल्क प्रोड्यूसर कंपनी प्राइवेट लिमिटेड, जयपुर (राजस्थान)

पाली जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड, पाली (राजस्थान)

पतंजलि आयुर्वेद लिमिटेड, हरिद्वार (उत्तराखंड)

परम डेयरी लिमिटेड (दिल्ली)

पब्लिक प्रोक्योरमेंट ग्रुप (दिल्ली)

पोरबंदर जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, पोरबंदर (गुजरात)

प्रभात डेयरी प्राइवेट लिमिटेड, अहमदनगर (महाराष्ट्र)

रायचूर बेल्लारी एवं कोप्पल जिला सहकारी दुग्ध संघ लिमिटेड, बेल्लारी (कर्नाटक)

राजस्थान सहकारी डेयरी संघ लिमिटेड, जयपुर (राजस्थान)

राजस्थान इलेक्ट्रोनिक्स एवं इंस्ट्रूमेंट्स लिमिटेड, जयपुर (राजस्थान)

राजारामबापू पाटिल सहकारी दुग्ध संघ लिमिटेड, सांगली (महाराष्ट्र)

रेड काऊ डेयरी प्राइवेट लिमिटेड, हुगली (पश्चिम बंगाल)

रॉकवेल ऑटोमेशन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, नोएडा (उत्तर प्रदेश)

आरपीएम इंजीनियरिंग (I) लिमिटेड, चेन्नई (तमिलनाडु)

आर.के. गणपति चेट्टियार, तिरूपुर (तमिलनाडु)

साबरकांठा जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, हिम्मतनगर (गुजरात)

संजय गांधी इंस्टीट्यूट ऑफ डेरी टेक्नोलॉजी, पटना (बिहार)

सखी महिला मिल्क प्रोड्यूसर कंपनी लिमेटेड, अलवर (राजस्थान)

सीरैप इंड्रस्टीज़, नौएडा (उत्तर प्रदेश)

श्री भावनगर जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (गुजरात)

श्री गणेश एग्रो वेट कार्पोरेशन, नवसारी (गुजरात)

सोलापुर जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक व प्रक्रिया संघ मर्यादित (महाराष्ट्र)

साइंटिफिक एंड डिजिटल सिस्टम्स (नई दिल्ली)

श्री एडिटिव्स (फार्मा एंड फूड्स) प्राइवेट लिमिटेड, गांधी नगर (गुजरात)

सूरत जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, सूरत (गुजरात)

श्री विजयविशाखा दुग्ध उत्पादक कंपनी लिमिटेड (आंध्र प्रदेश)

श्री राजेश्वरी डेयरी उत्पाद उद्योग प्राइवेट लिमिटेड, हैदराबाद (आंध्र प्रदेश)

स्टीलैप्स टेक्नोलॉजीस प्राइवेट लिमिटेड, बेंगलुरु (कर्नाटक)

एसएसपी प्राइवेट लिमिटेड, फरीदाबाद (हरियाणा)

कृष्णा जिला दुग्ध उत्पादक पारस्परिक सहायता सहकारिता संघ लिमिटेड, विजयवाड़ा (आंध्र प्रदेश)

रोहतक सहकारी दुग्ध उत्पादक लिमिटेड, रोहतक (हरियाणा)

उत्तर प्रदेश दीन दयाल उपाध्याय पशु विज्ञान एवं अनुसंधान संस्थान विश्वविद्यालय, मथुरा (उत्तर प्रदेश)

उमंग डेयरीज लिमिटेड (दिल्ली)

वैशाल पाटलिपुत्र दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड, पटना (बिहार)

वलसाड जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, नवसारी (गुजरात)

विद्या डेरी, आनंद (गुजरात)

विजय डेरी प्रोडक्ट्स, सूरत (गुजरात)

ज्यूजर इंजीनियर्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, पुणे (महाराष्ट्र)

वार्षिक सदस्य

ए. अरुणाचलम एंड कंपनी, कांगेयम (तमिलनाडु)

आर्शा केमिकल्स प्राइवेट लिमिटेड, रायगढ़ (महाराष्ट्र)

एबीटी इंडस्ट्रीज़, कोयंबटूर (तमिलनाडु)

अभिषेक ट्रेडलिंक्स, मुंबई (महाराष्ट्र)

ऐमनेक्स इंफोटेक्नोलॉजीस प्राइवेट लिमिटेड, अहमदाबाद (गुजरात)

एजी–नेक्स्ट टेक्नोलॉजीस प्राइवेट लिमिटेड, मोहाली (पंजाब)

भरूच जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (गुजरात)

बी.जी चितले डेरी, सांगली (महाराष्ट्र)

भोपाल सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (मध्य प्रदेश)

कोरोनेशन वर्थ इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)

सीएचआर हेन्सन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)

गोमती सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, अगरतला

जॉन बीन टेक्नोलॉजीस इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, पुणे (महाराष्ट्र)

कैरा जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लि., आनंद (गुजरात)

कोएलनमेसे या ट्रेडफेयर प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)

मिशेल जेनज़िक एजेंसी प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)

मदर डेयरी फल एवं सब्जी प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)

मदर डेयरी फल एवं सब्जी प्राइवेट लिमिटेड, इटावा (उत्तर प्रदेश)

पीएमएस इंजीनियर्स (इंटरनेशनल) सेवा (दिल्ली)

पुडुकोट्टई जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (तमिलनाडु)

राजकोट जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, राजकोट (गुजरात)

आरजीएस बेट न्यूट्रास्यूटिकलस कॉर्प, इरोड (तमिलनाडु)

सलेम जिला सहकारी दुग्ध उत्पाद संघ लिमिटेड, सलेम (तमिलनाडु)

सर्बल इंडिया ऐनीमल न्यूट्रीशन प्राइवेट लिमिटेड, चेन्नई (तमिलनाडु)

श्री ममता दुग्ध डेयरी प्राइवेट लिमिटेड, जालोर (राजस्थान)

एसपीएक्स फ्लो टेक्नोलॉजी इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, अहमदाबाद (गुजरात)

संगम दुग्ध उत्पादक कंपनी लिमिटेड, गुंटूर (आंध्र प्रदेश)

सुरेंद्रनगर जिला सहकारी दुग्ध संघ लिमिटेड, वाधवान (गुजरात)

तिरुवनंतपुरम क्षेत्रीय सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (केरल)

वास्टा बायोटेक प्राइवेट लिमिटेड, चेन्नई (तमिलनाडु)

बादल

- सुमित्रानंदन पंत

सुनता हूँ, मैंने भी देखा,
काले बादल में रहती चाँदी की रेखा!

काले बादल जाति द्वेष के,
काले बादल विश्व क्लेश के,
काले बादल उठते पथ पर
नव स्वतंत्रता के प्रवेश के!

सुनता आया हूँ, है देखा,
काले बादल में हँसती चाँदी की रेखा!

आज दिशा हैं घोर अँधेरी
नभ में गरज रही रण भेरी,
चमक रही चपला क्षण-क्षण पर
झनक रही झिल्ली झन.झन कर!

नाच-नाच आँगन में गाते केकी-केका
काले बादल में लहरी चाँदी की रेखा।

काले बादल, काले बादल,
मन भय से हो उठता चंचल!
कौन हृदय में कहता पलपल
मृत्यु आ रही साजे दलबल!

आग लग रही, घात चल रहेए विधि का लेखा!
काले बादल में छिपती चाँदी की रेखा!

मुझे मृत्यु की भीति नहीं है,
पर अनीति से प्रीति नहीं है,
यह मनुजोचित रीति नहीं है,
जन में प्रीति प्रतीति नहीं है!

देश जातियों का कब होगा,
नव मानवता में रे एका,
काले बादल में कल की,
सोने की रेखा!

डॉ. आर. एस. सोढ़ी

अध्यक्ष की बात, आपके साथ

भारत @ 2047 - विश्व का डेरी स्रोत

प्रिय पाठको,

हाल में भारत में अंतरराष्ट्रीय डेरी फेडेरेशन (आईडीएफ) के सम्मेलन, 'द वर्ल्ड डेरी समिट', की मेजबानी राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र–दिल्ली में 'ग्रेटर नोएडा स्थित इंडिया एक्सपो सेंटर एंड मार्ट' में की गयी। यह सुअवसर भारत को 48 वर्ष बाद मिला, जिसका आयोजन 15–22 सितंबर, 2022 के दौरान किया गया। वैश्विक महामारी कोविड–19 के बाद यह 'ऑफ़–लाइन मोड' मे होने वाला पहला विश्व डेरी शिखर सम्मेलन था। लगभग 48 वर्ष पूर्व 1974 में जब भारत ने पहले आईडीएफ–विश्व डेरी शिखर सम्मेलन का आयोजन किया था जो कुल वैश्विक दूध उत्पादन 416 मिलियन मीट्रिक टन (एमएमटी) यानी 114 करोड़ लीटर प्रतिदिन था। इसमें भारत का योगदान 22 एमएमटी यानी लगभग 5.5 प्रतिशत था, जो 6 करोड़ लीटर प्रतिदिन के बराबर बैठता है। पिछले सम्मेलन के बाद से अब तक भारत ने डेरी सैक्टर में एक लंबी और गौरवशाली यात्रा तय की है। अनेक कीर्तिमान बनाये हैं, जिन पर हमें गर्व है। उस समय हमारा देश दूध का अभाव झेल रहा था, जबकि आज 209 एमएमटी दूध उत्पादन (2021–2022) यानी 58 करोड़ लीटर प्रतिदिन के साथ हम विश्व के सबसे बड़े दूध उत्पादक हैं। डेरी सैक्टर में भारत का विश्व में सर्वप्रमुख स्थान बन गया है। आज़ादी के बाद देश की आबादी चार गुना बढ़ी है, जबकि दूध उत्पादन में 10 गुना की बढ़ोतरी दर्ज की गयी है। वैश्विक दूध उत्पादन में भारत का योगदान वर्ष 2030 तक 33 प्रतिशत और वर्ष 2047 तक 45 प्रतिशत होने की संभावना है।

इस वर्ष के विश्व डेरी शिखर सम्मेलन का मुख्य विषय (थीम) 'पोषण और आजीविका के लिए डेरी' था। इसमें देश–विदेश से आये 1500 से अधिक राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय डेरी प्रमुखों, विशेषज्ञों, उद्यमियों, उत्पादकों, अनुसंधान कर्मियों आदि ने भागीदारी की। सम्मेलन की कार्यवाही को कुल 24 सत्रों मे बांटा गया था, जैसे वैश्विक डेरी की दशा और दिशाएं, डेरी विज्ञान और फार्मिंग तकनीकें व इनोवेशन्स, सामाजिक आर्थिकी और आजीविका, पोषण और स्वास्थ्य आदि। साथ ही विश्व भर से आये डेरी विद्वानों ने सतत् डेरी और जलवायु परिवर्तन जैसे ज्वलंत विषयों पर भी चर्चा की। अनेक देशों के विशषज्ञों ने विभिन्न सत्रों मे 'ऑन–लाइन' उपस्थित होकर चर्चा में भागीदारी की। एफएओ, कोडेक्स, डब्लूएचओए, ओईसीडी, यूनेप, विश्व बैंक और 'ग्लोबल चिल्ड्रन न्यूट्रीशन फाउंडेशन' जैसे प्रतिष्ठित संबंधित संगठनों के अनेक प्रतिनिधियों/विशेषज्ञों ने विशेषज्ञ पैनल में शामिल होकर चर्चाओं में मूल्यवर्धन किया। सम्मेलन के दौरान लगभग 114 राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शकों ने अपनी कंपनियों के उत्पादों, तकनीकों आदि का प्रदर्शन किया।

दिनांक 12 सितंबर, 2022 को आयोजित उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने की। इस अवसर पर 3000 से अधिक गणमान्य अतिथि उपस्थित थे। प्रधानमंत्री जी ने ग्रामीण भारत के विकास में दूध उत्पादन,पशुपालन और संबंधित क्षेत्रों के योगदान पर जोर दिया और कहा कि दूध उत्पादन का व्यवसाय भारत की

संस्कृति का प्राचीन काल से ही अभिन्न अंग रहा है। विश्व के अन्य विकसित देशों के विपरीत भारत में डेरी विकास को मुख्य रूप से छोटे और सीमांत किसान गति दे रहे हैं। प्रधानमंत्री जी ने भारतीय डेरी सैक्टर की विशेषता बताते हुए कहा कि हमारे देश में बहुत सारे लोग दूध उत्पादन करते हैं ना कि कुछ लोग बहुत सारा दूध उत्पादन करते हैं। आज भारत विश्व में सबसे अधिक दूध उत्पादन करने वाला देश है, और यह सैक्टर देश के आठ करोड़ से अधिक परिवारों को आजीविका प्रदान करता है। दूध उत्पादन में संलग्न कुल कर्मियों में से लगभग 70 प्रतिशत महिलाएं हैं, जो डेरी और पशुपालन से जुड़ी लगभग सभी प्रक्रियाओं को संचालित करती हैं। इस तरह का अनोखा और सफल व्यावसायिक मॉडल केवल भारत में देखा जा सकता है।

आईडीए के अध्यक्ष 'अमूल' के स्टॉल पर माननीय प्रधानमंत्री जी को उपलब्धियों से अवगत कराते हुए।

भारत सरकार के माननीय गृह मंत्री और सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने भी इस अवसर पर डेरी और पशुपालन के विकास पर अपने विचार प्रस्तुत किये। उन्होंने भारतीय डेरी सैक्टर के अनूठे सहकारी व्यावसायिक मॉडल की सराहना करते हुए कहा कि इसमें ग्राहकों से प्राप्त कीमत का लगभग 70 प्रतिशत दूध उत्पादक डेरी किसान को वापस मिलता है, जो असाधारण है। वर्ष 2014 में भारत विश्व की 11वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था थी, जो अब पांचवें नंबर पर है। सहकारिता मंत्री ने कहा कि डेरी सैक्टर के विकास के लिए हमें अधिक व्यावसायिक दृष्टिकोण के साथ नवीन प्रौद्योगिकी, कम्प्यूटरीकरण और डिजिटल भुगतान को बड़े पैमाने पर अपनाना होगा। उन्होंने डेरी सैक्टर का आह्वान करते हुए कहा कि हमें दूध उत्पादन बढ़ाने के लिए अधिक प्रयास करने होंगे ताकि घरेलू बाजार में दूध और डेरी उत्पादों की आपूर्ति बढ़ सके और हम गरीब देशों को दूध भेज सकें। गृह मंत्री ने सरकार की ओर से 2024 तक गांव के स्तर पर दो लाख नयी डेरी सहकारिताओं की स्थापना हेतु समुचित सहायता देने का आश्वासन दिया।

आईडीएफ की महानिदेशक सुश्री कैरोलीन एमंड ने अपने संबोधन में कहा कि आईडीएफ–विश्व डेरी शिखर सम्मेलन 2022 एक ऐसा सुअवसर है, जहां डेरी सैक्टर के वैश्विक साझेदार और संबंधित विश्व डेरी से संबंधित अनेक ज्वलंत मुद्दों पर चर्चा करके अपने अनुभवों और इनोवेशन्स की साझेदारी कर सकते हैं। साथ ही वे डेरी की नई दिशाओं को जानते–समझते हुए भविष्य की बेहतर योजनाएं बना सकते हैं, नेटवर्किंग विकसित कर सकते हैं और नये व्यावसायिक अवसर भी तलाश सकते हैं। उन्होंने कहा कि यह भारतीय डेरी सैक्टर को अच्छी तरह से जानने–समझने का भी एक अच्छा अवसर है, ताकि इसका लाभ उठाया जा सके। इस संदर्भ में आईडीएफ के अध्यक्ष श्री पियरक्रिस्टियानो ब्राज़ेल ने कहा कि भारतीय डेरी सैक्टर की वैल्यू चेन में आधुनिकता और प्रौद्योगिकी के कुशल समावेश को देखकर वे अत्यंत प्रभावित हैं। भारतीय डेरी के वर्तमान स्वरूप और इसके विकास की तेज रफ्तार को देखकर स्पष्ट है कि भविष्य में यह वैश्विक डेरी बनेगी। वैश्विक स्तर पर भारतीय डेरी का सर्वप्रमुख स्थान आगे और सशक्त होगा।

केंद्रीय मात्स्यिकी, पशुपालन और डेरी मंत्री, भारत सरकार श्री परषोत्तम रूपाला ने अपने भाषण में कहा कि भारतीय डेरी व्यवसाय ढाई गुना की वृद्धि के साथ 30 खरब (ट्रिलियन) रुपये तक पहुंचना तय है। भारत सरकार द्वारा डेरी सहकारी

सैक्टर को अनेक योजनाओं के माध्यम से प्रोत्साहन दिया जा रहा है ताकि भारत भी अन्य अग्रणी अर्थव्यवस्थाओं से कदम मिलाकर आगे बढ़ सके। उन्होंने कहा कि भारतीय डेरी उद्योग को विश्व में शिखर पर पहुंचाने में डेरी सहकारिताओं ने अहम् भूमिका निभायी है। भारत सरकार का नेशनल डेरी डेवलपमेंट बोर्ड (एनडीडीबी) सहकारिताओं के विकास के लिए संकल्पबद्ध है ताकि डेरी उत्पादन में वृद्धि का लाभ सभी को मिल सके।

विश्व डेरी शिखर सम्मेलन के तकनीकी सत्र में भागीदारी करते हुए एनडीडीबी के अध्यक्ष श्री मीनेश शाह ने कहा कि भारतीय डेरी व्यवसाय का कुल वर्तमान मूल्य 13 खरब रुपये आंका गया है, जिसके अगले पांच वर्षों में दुगुना होकर वर्ष 2027 तक 30 खरब रुपये होने का अनुमान है। उन्होंने यह भी बताया कि डेरी सैक्टर की औसत वृद्धि दर 15 प्रतिशत पर बनी रहेगी, जबकि डेरी के मूल्यवर्धित उत्पादों जैसे आर्गेनिक दूध, चीज़, फ्लेवर्ड दूध, लस्सी आदि की वृद्धि दर 20 प्रतिशत होगी। आने वाले वर्षों में यही उत्पाद भारतीय डेरी के विकास को तेज गति देंगे।

विश्व डेरी शिखर सम्मेलन का आयोजन भारत में होने से हमें यह सुअवसर मिला है कि हम छोटे दूध उत्पादकों, विशेषकर महिलाओं, की सामर्थ्य का प्रदर्शन कर सकें और बता सकें कि भारत में दूध उत्पादन और उपभोग वास्तव में बहुत बड़ी संख्या में लोगों द्वारा किया जाता है। इसके साथ ही हम कुछ अन्य प्रमुख पहलुओं को भी प्रदर्शित कर रहे हैं, जैसे सप्लाई चेन में कुशलता, डेरी में नवीनतम प्रौद्योगिकी का उपयोग, विभिन्न संगठनों द्वारा अपने दूध उत्पादक सदस्यों को 'ऑन–लाइन' भुगतान, नये उत्पादों के निर्माण में इनोवेशन का उपयोग, दूध संग्रह, प्रसंस्करण एवं मार्केटिंग के क्षेत्र में नवीनतम प्रौद्योगिकी का उपयोग, आदि। सम्मेलन में आये सभी विदेशी प्रतिनिधि एवं अतिथि भारत में अपनायी जा रही डेरी प्रक्रियाओं को स्वयं देखकर आश्चर्यचकित थे और उन्हें विश्वास हो गया कि इस क्षेत्र में सहकारिता का भविष्य उज्ज्वल है।

दूध उत्पादन के लघु एवं दीर्घकालीन रुझानों को देखते हुए पूर्वानुमान है कि अगले 25 वर्षों में भारत में दूध उत्पादन 628 एमएमटी के स्तर पर पहुंच जाएगा और विश्व के दूध उत्पादन में इसका योगदान 45 प्रतिशत तक पहुंच जाएगा। इस दौरान दूध उत्पादन की कुल कीमत 400 अरब अमेरिकी डॉलर हो जाएगी, जो अभी 100 अरब अमेरिकी डॉलर है। उस समय भारत के पास 110 एमएमटी दूध का अतिरिक्त भंडार मौजूद होगा। इसका अर्थ यह है कि हमें दूध और डेरी उत्पादों के निर्यात को बढ़ावा देने के लिए अभी से निवेश प्रारंभ कर देना चाहिए। भारतीय डेरी उद्योग का भविष्य अत्यंत आशाजनक है और विश्व को भारतीय डेरी की वास्तविक सामर्थ्य प्रदर्शित करने का यह एक सुनहरा अवसर भी है।

मैंने पिछले अनेक वर्षों में देश–विदेश में अनेक अंतरराष्ट्रीय डेरी सम्मेलनों और विश्व डेरी शिखर सम्मेलनों में भागीदारी की है। मैं पूरे विश्वास के साथ कह सकता हूं कि भारत ने आयोजन के स्तर को बहुत ऊपर उठा दिया है। तीन–दिवसीय शिखर सम्मेलन में प्रतिभागियों को दी जाने वाली सुविधाएं और तकनीकी सत्रों की गुणवत्ता का स्तर अतुलनीय रहा। मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि आने वाले समय में भारत में ऐसे अनेक उच्च–स्तरीय आयोजन संपन्न होंगे और विश्व भर में भारत की असाधारण क्षमता और सामर्थ्य का परचम लहराएगा।

(डॉ. आर. एस. सोढ़ी)

रिपोर्ट

भारत में विश्व स्तरीय आयोजन

अंतरराष्ट्रीय डेरी महासंघ का विश्व डेरी शिखर सम्मेलन - 2022

प्रस्तुतिः जगदीप सक्सेना

अंतरराष्ट्रीय डेरी महासंघ (इंटरनेशनल डेरी फेडेरेशन) के विश्व डेरी शिखर सम्मेलन (वर्ल्ड डेरी समिट)–2022 का आयोजन भारत में 48 वर्ष बाद किया गया। इसमें 30 देशों से आये डेरी विशेषज्ञों, उद्यमियों, वैज्ञानिकों, प्रबंधकों और डेरी किसानों ने भागीदारी की। इसका आयोजन 12–15 सितंबर, 2022 के दौरान दिल्ली–राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में स्थित ग्रेटर नोएडा के इंडिया एक्सपो सेंटर एंड मार्ट में किया गया। लगभग 1500 से अधिक डेरी प्रतिनिधियों ने इस दौरान आयोजित व्याख्यानों, चर्चाओं, तकनीकी सत्रों में अपना योगदान किया। प्रस्तुत है डेरी शिखर सम्मेलन की एक संक्षिप्त रिपोर्ट।

माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी उद्घाटन सत्र में मंच पर आसीन। उनके बायें उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री श्री योगी आदित्यनाथ; उनके दायें केन्द्रीय मात्स्यिकी, पशुपालन एवं डेरी मंत्री श्री परषोत्तम रूपाला

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा प्रदर्शनी का उद्घाटन
(बायें से क्रम में) श्री मीनेश शाह, अध्यक्ष, एनडीडीबी; श्री परषोत्तम रूपाला, केन्द्रीय मात्स्यिकी, पशुपालन एवं डेरी मंत्री; श्री योगी आदित्यनाथ, मुख्य मंत्री, उत्तर प्रदेश; एवं श्री जतिन्द्र नाथ स्वेन, सचिव, मात्स्यिकी, पशुपालन एवं डेरी मंत्रालय

वैश्विक महामारी कोविड–19 के बाद पहली बार डेरी शिखर सम्मेलन का आयोजन ऑफ़–लाइन मोड में किया गया, हालांकि बड़ी संख्या में डेरी विशेषज्ञों ने इसमें ऑन–लाइन भागीदारी भी की। शिखर सम्मेलन का मुख्य विषय यानी थीम 'आजीविका और पोषण के लिए डेरी' था। शिखर सम्मेलन को कुल 24 सत्रों में बांटा गया था, जो अलग–अलग विषयों पर केंद्रित थे, जैसे वैश्विक डेरी की दशा और दिशाएं, डेरी विज्ञान और इनोवेशन्स, आजीविका, पोषण व स्वास्थ्य, सतत् विकास और जलवायु परिवर्तन आदि। डेरी से संबंधित अनेक अंतरराष्ट्रीय संगठनों, जैसे एफएओ, कोडेक्स, 'यूनेप', विश्व बैंक आदि, से संबंद्ध 120 डेरी विशेषज्ञों ने विशेष वक्ताओं के रूप में तकनीकी सत्रों में अपने विचार प्रस्तुत किये। शिखर सम्मेलन में किसानों (925) और प्रतिनिधियों (776) के अलावा राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर के 114 प्रदर्शकों ने भी अपनी प्रौद्योगिकी और इनोवेशन्स का प्रर्दशन किया। प्रदर्शनी का आयोजन लगभग 7,000 वर्ग मीटर क्षेत्र में किया गया था।

स्वागत और उद्घाटन

श्री ब्राज़ेल द्वारा स्वागत भाषण

आईडीएफ के अध्यक्ष श्री पियरक्रिस्टियानो ब्राज़ेल ने शिखर सम्मेलन में आये सभी प्रतिभागियों, अतिथियों आदि का स्वागत करते हुए एनडीडीबी और इसके अधिकारियों की इस सुंदर आयोजन के लिए सराहना की। उन्होंने उद्घाटन के लिए सहर्ष तैयार होने पर प्रधानमंत्री के प्रति विशेष आभार व्यक्त किया। अध्यक्ष ने कोविड–19 के दौरान दूध और डेरी कर्मियों की सराहना की और बधाई दी।

शिखर सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए माननीय प्रधानमंत्री जी ने कहा कि डेरी सैक्टर ना केवल ग्रामीण अर्थव्यवस्था को गति व बल प्रदान करता है, बल्कि विश्व भर में करोड़ों लोगों की आजीविका का मुख्य स्रोत भी है। मुझे पूरा विश्वास है कि यहां पधारे सभी महानुभाव

एक–दूसरे के ज्ञान और जानकारी का लाभ उठाएंगे और डेरी सैक्टर से जुड़े विचारों, प्रौद्योगिकी, विशेषज्ञता और परंपराओं का परस्पर आदान–प्रदान करके लाभान्वित होंगे। शिखर सम्मेलन की सामयिकता का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि यह सुखद है कि यह सम्मेलन ऐसे समय में आयोजित किया जा रहा है, जब भारत ने अपनी आज़ादी के 75 वर्ष पूरे किये हैं। यह भी संयोग है कि देश के 75 लाख डेरी किसान प्रौद्योगिकी के माध्यम से इस सम्मेलन से जुड़ रहे हैं।

भारत के डेरी सैक्टर की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि डेरी से संबद्ध कार्यकलाप हमारी प्राचीन संस्कृति का अंग हैं। केवल एक, दो या तीन पशु रखने वाले छोटे और सीमांत किसान देश के कुल दूध उत्पादन में अहम् योगदान देते हैं। डेरी सैक्टर लगभग आठ करोड़ परिवारों की आजीविका और रोजगार का स्रोत है। भारत में डेरी सहकारिता का एक अनूठा व्यावसायिक मॉडल है, जिसे अन्य गरीब देश अपना सकते हैं। इसके माध्यम से दो लाख गांवों मे दो करोड़ डेरी किसानों से हर रोज़ दिन में दो बार दूध संग्रह करके उपभोक्ताओं तक पहुंचाया जाता है। उपभोक्ता से प्राप्त कीमत का लगभग 70 प्रतिशत भाग किसान को वापस मिल जाता है। गुजरात में दूध की कीमत का भुगतान सीधे महिला डेरी किसानों के बैंक खाते में किया जाता है। डेरी सैक्टर के विकास के लिए सरकार द्वारा किये जा रहे प्रयासों का उल्लेख करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि 2014 में देश का कुल दूध उत्पादन 146 मिलियन टन था जो बढ़कर 210 मिलियन टन हो गया है, यानी इसमें 44 प्रतिशत वृद्धि हुई है। आज विश्व में दूध उत्पादन दो प्रतिशत की दर से बढ़ रहा है, जबकि भारत में यह दर 6 प्रतिशत है। उन्होंने गोकुल मिशन, गोबरधन योजना, डेरी सैक्टर में डिजिटल तकनीकों का उपयोग और पशुओं के टीकाकरण के लिए चलायी जा रही योजनाओं का उल्लेख भी किया। उन्होंने बताया

(बायें से) आईडीए के अध्यक्ष डॉ. आर. एस. सोढ़ी; आईडीएफ की महानिदेशक सुश्री कैरोलीन एमंड; आईडीएफ के अध्यक्ष श्री पियरक्रिस्टियानों ब्राज़ेल

कि पशु आधार नामक योजना के माध्यम से पशुओं का 'डेटाबेस' तैयार किया जा रहा है। पशु गोबर से बायोगैस और बायो–सीएनजी भी बड़े पैमाने पर बनायी जा रहीं हैं। प्रधानमंत्री ने गो–पशुओं की स्थानीय यानी देसी नस्लों को भारत के डेरी सैक्टर की शक्ति बताते हुए इनके आनुवंशिक विकास और संरक्षण की जानकारी दी।

विचार और चर्चा

केंद्रीय गृह और सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने अपने भाषण में बताया कि भारत सरकार द्वारा देश भर में 2024 तक गांव के स्तर पर दो लाख डेरी सहकारिताओं की स्थापना में मदद की जाएगी। उन्होंने यह भी कहा कि देश के डेरी उद्योग को अपने काम–काज में अधिक व्यावसायिकता, नवीनतम प्रौद्योगिकी, कम्प्यूटर के उपयोग और डिजिटल भुगतान को अपनाना चाहिए। सहकारिता

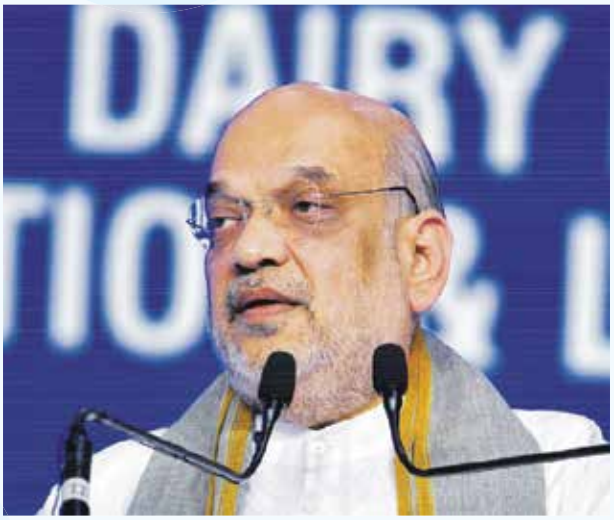

केंद्रीय गृह और सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने दूध उत्पादन को कई गुना बढ़ाने का आह्वान किया।

मंत्री ने डेरियों का आह्वान करते हुए कहा कि आपको दूध का उत्पादन कई गुना बढ़ाना चाहिए ताकि हम घरेलू मांग पूरी करने के साथ गरीब देशों को भी दूध की आपूर्ति कर सकें। श्री शाह ने भारतीय अर्थव्यवस्था में डेरी सैक्टर के योगदान की चर्चा करते हुए कहा कि 2014 में भारत की अर्थव्यवस्था विश्व में 11वें स्थान पर थी, जो अब नंबर पांच पर पहुंच गई है। मुझे पूरा विश्वास है कि अगले कुछ ही वर्षों में हम तीसरे स्थान पर होंगे।

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ ने प्रदेश में डेरी विकास की संभावनाओं पर जोर देते हुए कहा कि उत्तर प्रदेश संपूर्ण भारत में सबसे अधिक आबादी वाला राज्य है और दूध उत्पादन में भी नंबर एक है। राज्य में 319 लाख मीट्रिक टन दूध का उत्पादन होता है, जो देश के दूध उत्पादन का लगभग 16 प्रतिशत है। प्रदेश में 110 बड़ी डेरियां संचालित की जा रही हैं, जिनमें सहकारी डेरी भी सम्मिलित हैं। लगभग 8,600 दूध सहकारी समितियां हैं, जिनसे संबंद्ध चार लाख सदस्य उत्पादन के कार्य में संलग्न हैं। प्रदेश में नौ नयी ग्रीनफील्ड डेरियों की स्थापना पर जोर–शोर से कार्य चल रहा है, इस कार्य में सहायता के लिए उन्होंने एनडीडीबी से अनुरोध किया। भारत सरकार

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ ने प्रदेश में डेरी की उज्ज्वल संभावनाओं को रेखांकित किया।

के पशुपालन इंफास्ट्रक्चर फंड के अंतर्गत प्रदेश सरकार ने अब तक 300 करोड़ रुपये की परियोजनाएं स्वीकृत की हैं। उन्होंने बताया कि 84 लाख गोपशुओं को अब तक टीका भी लगाया जा चुका है।

केंद्रीय मात्स्यिकी, पशुपालन और डेरी मंत्री श्री परषोत्तम रूपाला ने डेरी उद्योग के भविष्य पर आयोजित सत्र में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि देश में डेरी विकास को तेज और सशक्त बनाने के लिए एक सुदृढ़ संगठनात्मक संरचना उपलब्ध है। एनडीडीबी के माध्यम से डेरी सहकारिताओं के विकास और प्रसार का अभियान जारी है, जिसके लिए गांव–गांव में डेरी समितियां गठित की जा रही हैं। उन्होंने बताया कि भारत सरकार ने डेरी उत्पादों की उच्च–स्तरीय गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर के मानक निर्धारित किये हैं। भारत के मूल्यवर्धित डेरी उत्पाद भविष्य में भारतीय डेरी की दिशा और प्रगति निर्धारित करेंगे।

केंद्रीय मात्स्यिकी, पशुपालन और डेरी मंत्री परपोषत्तम रूपाला ने देश में डेरी सहकारिता के विकास की जानकारी दी।

केंद्रीय ग्रामीण विकास और पंचायती राज मंत्री गिरिराज सिंह ने देश की प्रगति के लिए किसानों और पशुपालकों की प्रगति को अनिवार्य बताया।

केंद्रीय ग्रामीण विकास और पंचायतीराज मंत्री श्री गिरिराज सिंह ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था में डेरी की भूमिका को रेखांकित करते हुए कहा कि यह देश तभी प्रगति करेगा, जब किसानों की प्रगति होगी और किसानों की प्रगति तभी होगी जब उसकी खेती और पशुधन में प्रगति होगी। कृषि और पशुधन की प्रगति तभी हो सकती है, जब कृषि और दूध उत्पादन की लागत में कमी आये। मंत्री महोदय ने विदेशी विशेषज्ञों से ग्रामीण भारत के लिए प्रौद्योगिकी आधारित एक मॉडल सुझाने का अनुरोध किया, जिससे हमारे ग्रामीण क्षेत्र वैश्विक डेरी के विकास में अपना योगदान कर सकें।

मात्स्यिकी, पशुपालन और डेरी राज्य मंत्री डॉ. संजीव बालियान ने कहा कि हमारा विभाग पशु कल्याण को प्रोत्साहन देने के लिए निरंतर कड़ा प्रयास कर रहा है। हमें अपने पशुधन को नये पशु रोगों से बचाने और रोगों के प्रसार पर रोकथाम लगाने के लिए एकजुट होकर कार्य करना होगा। रोगों के एक देश से दूसरे देश तक प्रसार की रोकथाम में सभी संबंधितों को सरकार के साथ सहयोग करना चाहिए। हमें अपने पशुओं को अफ्रीकन स्वाइन फीवर, और लम्पी स्किन रोग से बचाने के लिए एक प्रयास करना चाहिए, उन्होंने कहा।

'अल्प पर्यावरणी प्रभाव के लिए सतत् डेरी' विषय पर आयोजित सत्र में केंद्रीय व्यापार एवं उद्योग मंत्री; टेक्सटाइल मंत्री; और उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्री श्री पीयूष गोयल ने कहा कि भारत डेरी फार्मिंग के पर्यावरणीय प्रभावों को कम करने के लिए वैश्विक डेरी समुदाय के साथ खड़ा है। उन्होंने कहा कि भारत डेरी के वैश्विक उत्सर्जनों को कम करने के लिए अपने विशाल सहकारी तंत्र के माध्यम से प्रयत्नशील है, जिसमें करोड़ों छोटे व सीमांत किसान संलग्न हैं। श्री गोयल ने आईडीएफ को सुझाव दिया कि भारत में वैज्ञानिकों की एक टीम तैनात की जाए जो देश के विभिन्न भागों में जलवायु और डेरी के सह–संबंधों की पड़ताल करके छोटे किसानों के लिए जलवायु परिवर्तन के व्यावहारिक समाधान सुझाने का काम करे।

विशेषज्ञों ने कहा.....

'पोषण और आजीविका' विषय पर आयोजित तकनीकी सत्र में आईडीए के अध्यक्ष और 'अमूल' के प्रबंध निदेशक डॉ. आर. एस. सोढ़ी ने भारतीय डेरी सैक्टर के अगले 25 वर्ष की रूपरेखा पर अपने विचार प्रस्तुत किये। उन्होंने कहा कि वर्ष 1974 में जब आईडीएफ का शिखर सम्मेलन भारत में आयोजित किया गया था तो देश में दूध उत्पादन 22 मिलियन टन था, जबकि आज यह लगभग 210 मिलियन टन है। भारत सरकार द्वारा स्थानीय डेरी उत्पादन और स्थानीय डेरी उत्पादों को विशेष प्रोत्साहन दिया जा रहा है। उन्होंने बताया कि अगले 25 वर्ष में भारत में दूध उत्पादन 628 मिलियन टन के उच्च स्तर पर होगा, जबकि दूध और डेरी उत्पादों की मांग 517 मिलियन टन होगी। इस तरह भारत के पास 111 मिलियन टन का विशाल भंडार निर्यात के लिए उपलब्ध होगा। भारत में प्रति व्यक्ति प्रति दिन दूध उपलब्धता बढ़कर 427 ग्राम से 852 ग्राम पर पहुंच जाएगी। इस अनूठी सफलता गाथा का मुख्य कारण यह है कि हमारे देश ने स्थानीय स्रोतों और संसाधनों के कुशल उपयोग के लिए एक व्यावहारिक मॉडल विकसित और लागू किया है। इसका सबसे सशक्त उदाहरण 'अमूल' की चमत्कारिक सफलता है, जिसने 100 मिलियन से ज्यादा लोगों को रोजगार दिया है और डेरी क्षेत्र में महिलाओं का सशक्तिकरण किया है। श्री मयंक त्रिवेदी, वरिष्ठ उपाध्यक्ष और डेरी एसबीयू नेस्ले के ग्लोबल हेड ने अपने संबोधन में बताया कि नेस्ले आज पोषण, स्वास्थ्य और 'वैलनेस' की अग्रणी कंपनी है। उन्होंने कहा कि आज डेरी केवल पोषण का स्रोत नहीं है, बल्कि करोड़ों लोगों के लिए आजीविका का उत्तम स्रोत भी है। श्री त्रिवेदी ने कहा कि डेरी क्षेत्र को सतत् बनाना एक बड़ी चुनौती है, परंतु वैश्विक स्तर पर एकजुट होकर हम इसका सामना कर सकते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि भारत अपनी परंपराओं और बिज़नेस मॉडल के कारण वैश्विक स्तर पर इसमें योगदान कर सकता है। डेनमार्क के अर्ला फूड्स के सीनियर प्रोजेक्ट मैनेजर ने बताया कि जब सहकारी संस्थाओं का विकास होता है, तो उनका विलय हो जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि अर्ला फूड्स एक विशाल सहकारी संगठन है, जिसका मुख्यालय डेनमार्क में है, परंतु इसकी शाखाएं सात अलग–अलग देशों में फैली हुईं हैं। डेरी सैक्टर ने ग्रामीण संपन्नता, महिला सशक्तिकरण और आर्थिक प्रगति में योगदान दिया है। उन्होंने जोर देकर कहा कि सहकारी संस्थाओं से किसानों को आकर्षक लाभ प्राप्त होता है।

आईडीए के अध्यक्ष डॉ. आर. एस. सोढ़ी ने भारत को भविष्य की वैश्विक डेरी बताया।

'खाद्य नीतियां और नियमन' विषय पर आयोजित तकनीकी सत्र में पशु उत्पादन और स्वास्थ्य विभाग (एनएसए) के निदेशक तियेनसिन थानावट ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि आज चुनौती यह है कि समाज की प्रोटीन की मांग को पूरा करते हुए डेरी के पर्यावरणीय प्रभावों को कैसे न्यूनतम किया जाए। डेरी सैक्टर में अभूतपूर्व वृद्धि होने के बाद भी डेरी किसान और उत्पादक चारे की कमी, बुनियादी सुविधाओं का अभाव,

मार्केटिंग और उचित कीमत जैसी समस्याओं से जूझ रहे हैं। डेरी उद्योग में कार्बन उत्सर्जन को कम करने के उपाय उपलब्ध है, इन्हें अपनाना होगा। एफएओ और आईडीएफ मिलकर डेरी प्रणालियों से ग्रीन हाउस गैस के उर्त्सजन को कम करने के उपायों पर काम कर रहे हैं। हम सभी मिलकर बेहतर उत्पादन, बेहतर पोषण, बेहतर जीवन के लिए काम कर सकते हैं। हमें ऐसा करना चाहिए, उन्होंने कहा। यूएसडीए के मिनिस्टर ऑफ़ फूड सेफ्टी एंड ऐसोसिएट एग्रीकल्चर मेका व्हैतीरी ने कहा कि हमें पर्यावरण और लोगों की बेहतर देखभाल का लक्ष्य बनाना चाहिए। हमें सामुदायिक विकास करना है और किसानों को सहायता पहुंचानी है। हमें यह भी देखना है कि उपभोक्ताओं तक उपयुक्त, सुरक्षित और पूर्ण विवरण के साथ उत्पाद पहुंचे, उन्होंने कहा।

एक अन्य तकनीकी सत्र में एनडीडीबी के अध्यक्ष श्री मीनेश शाह ने कहा कि वर्तमान में भारतीय डेरी व्यवसाय की कुल कीमत 13 ट्रिलियन (खरब) रुपये आंकी गई है। हमें आशा है कि अगले पांच वर्ष में यानी 2027 तक यह दुगुनी होकर 30 ट्रिलियन रुपये तक पहुंच जाएगी। उन्होंने कहा कि डेरी सैक्टर में 15 प्रतिशत की औसत वृद्धि दर देखी गई है, लेकिन इसके मूल्यवर्धित उत्पादों, जैसे आर्गेनिक दूध, फ्लेवर्ड मिल्क, चीज़, लस्सी आदि, में 20 प्रतिशत की वृद्धि दर रिकार्ड की जा रही है। भविष्य में ये उत्पाद भारतीय डेरी के विकास को गति और बल प्रदान करेंगी। वर्ल्ड आर्गेनाइज़ेशन फॉर ऐनीमल हैल्थ (डब्लूओएएच) के अध्यक्ष डॉ. हिरोफूमी कुगिता ने डेरी सैक्टर में पशु स्वास्थ्य की देखरेख पर जोर देते हुए कहा कि वर्ष 2020 से लम्पी स्किन रोग विश्व के 45 देशों में अपना प्रकोप दिखा चुका है। उन्होंने बताया कि पशु रोगों की जांच के लिए हमारे संगठन की 300 से अधिक प्रयोगशालाएं विश्व के अनेक भागों में कार्यरत हैं। पशुपालन एवं डेरी विभाग (भारत सरकार) के संयुक्त सचिव श्री उपमन्यु बासु ने कहा कि भारत में डेरी का एक अनूठा मॉडल कार्य कर रहा है, जिससे आठ करोड़ परिवारों को आजीविका भी प्राप्त

एनडीडीबी के अध्यक्ष श्री मीनेश शाह ने डेरी के उज्ज्वल भविष्य को बताते हुए इसमें मूल्यवर्धन की आवश्यकता पर जोर दिया।

होती है। उन्होंने राष्ट्रीय पशु रोग नियंत्रण कार्यक्रम की जानकारी देते हुए बताया कि हमने 2025 तक टीकाकरण द्वारा खुरपका–मुंहपका रोग और ब्रुसेलोसिस के नियंत्रण का लक्ष्य तय किया है। सन् 2030 तक देश को एफएमडी से मुक्त करना है, इसके लिए 100 प्रतिशत पशुओं का टीकाकरण करना है।

विश्व डेरी शिखर सम्मेलन के दौरान अनेक विशेषज्ञों, संस्थाओं, संगठनों, कार्यक्रमों आदि को डेरी सैक्टर में उनके विशिष्ट योगदान के लिए पुरस्कृत व स्म्मानित किया गया। सम्मेलन को पर्यावरण–हितैषी उपायों के साथ आयोजित किया गया। परिवहन के लिए इलेक्ट्रिक वाहन उपयोग में लाये गये और प्लास्टिक से बनी वस्तुओं का उपयोग नहीं किया गया। खाद्य व्यर्थों के निपटान के लिए कम्पोस्ट बनाने की प्रक्रिया अपनायी गई। ■

नवीन

पशुधन महत्व

ऑनलाइन वेटरनरी क्लीनिक द्वारा पशु उपचार

रूपसी तिवारी[1], अनुज चौहान[2] तथा त्रिवेणी दत्त[3]

[1]प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी, एटिक, [2]वरिष्ठ वैज्ञानिक, पशुधन उत्पादन और प्रबंधन विभाग, [3]निदेशक
भाकृअनुप–भारतीय पशु–चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर, बरेली, उत्तर प्रदेश (243122)

ऑनलाइन वेटरनरी क्लीनिक ऐप पशुपालकों को विशेषज्ञों के साथ बातचीत के लिए कई सुविधाजनक संचार माध्यम जैसे वॉयस कॉल, वीडियो कॉल और चैट के विकल्प प्रदान करता है। इससे पशुपालकों में इस ऐप के प्रति विश्वास बढ़ेगा तथा संस्थान के प्रति भी अपनेपन की भावना सशक्त होगी। इस ऐप में पशु चिकित्सा विशेषज्ञों और पशुपालकों के बीच सही, स्पष्ट और समय पर संचार उपलब्ध कराने की अपार संभावनाएं हैं और यह पशु चिकित्सा सेवाओं के डिजिटलीकरण में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित होगा।

पशुधन क्षेत्र हमारे राष्ट्र की अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। भारत में विश्व की सबसे अधिक पशुधन संख्या पायी जाती है, जो पशुपालकों की आजीविका पालन करने में सक्रिय योगदान प्रदान करती है। बीसवीं पशुधन गणना के अनुसार, देश की पशुधन संख्या 535.78 मिलियन है जो विश्व की पशुधन संख्या का लगभग 31 प्रतिशत है। यहां लगभग 303.76 मिलियन गोजातीय पशु, 74.26 मिलियन भेड़, 148.88 मिलियन बकरियां, 9.06 मिलियन शूकर एवं 851.81 मिलियन कुक्कुट हैं। भारत गायों और बकरियों की संख्या में विश्व में प्रथम स्थान पर है। साथ ही दूध उत्पादन (198.44 मिलियन टन) में प्रथम, अंडा उत्पादन (114.38 बिलियन) में तीसरे और मांस उत्पादन (8.60 मिलियन टन) में पाँचवें स्थान पर है। सन् 2019–2020 में प्रतिदिन प्रति व्यक्ति दूध की उपलब्धता 406 ग्राम एवं प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष अंडे की उपलब्धता 86 थी। आंकड़े दर्शाते हैं कि पशुधन क्षेत्र भारत में सबसे तेजी से बढ़ते कृषि उपक्षेत्रों में से एक है। सन् 2014–15 से 2018–19 के दौरान पशुधन क्षेत्र 8.24 प्रतिशत की

उत्तम आहार, उत्तम स्वास्थ्य

चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (सीएजीआर) से बढ़ा है। कुल फार्म एवं संबद्ध क्षेत्र सकल मूल्य (स्थिर कीमतों पर) में पशुधन का योगदान 24.32 प्रतिशत वर्ष (2014–15) से

बढ़कर 28.63 प्रतिशत (2018–19) हो गया है। 2018–19 में पशुधन क्षेत्र ने कुल सकल मूल्य में 4.19 प्रतिशत योगदान दिया है। पिछले वित्तीय वर्ष की तुलना में 2019–20 में स्थिर कीमतों (2011–12) पर पशुधन क्षेत्र के सकल मूल्य में 7 प्रतिशत की सकारात्मक वृद्धि दर्ज की गई थी। इस क्षेत्र से सकल मूल्य का हिस्सा महत्वपूर्ण है, क्योंकि पशुपालन के साथ–साथ इसके विभिन्न उप–क्षेत्र देश की आबादी के एक बड़े हिस्से के लिए प्राथमिक व्यवसाय बने हुए हैं। सर्वाधिक उल्लेखनीय बात यह है कि अब दूध, कृषि क्षेत्र की प्रमुख फसल गेहूँ एवं धान के संयुक्त उत्पादन मूल्य को पार करते हुए सबसे बड़ी कृषि वस्तु के रूप में उभरा है। पशुपालन क्षेत्र स्थानीय एवं राष्ट्रीय खाद्य आपूर्ति को बनाए रखने, उद्यमिता एवं धन सृजन, गरीबी उन्मूलन और रोजगार सृजन एवं समाज के पोषण उन्मूलन हेतु अवसर प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

पशुओं में होने वाले विभिन्न रोगों का पशु उत्पादकता और उत्पादन पर ऋणात्मक प्रभाव होता है। इतना ही नहीं रोगों के कारण जीवित पशुओं, मांस और अन्य पशु उत्पादों के व्यापार भी बुरी तरह से प्रभावित होते हैं, जिससे देश के आर्थिक विकास पर प्रभाव पड़ता है। विभिन्न अध्ययनों से यह संकेत मिला है कि गोवंशीय पशुओं में सिर्फ खुरपका –मुँहपका रोग से करीब 20,000 करोड़ रुपये प्रतिवर्ष का नुकसान हो रहा है। गलघोंटू रोग से प्रतिवर्ष 5255 करोड़ रुपये की हानि हो रही है। भेड़ व बकरियों में सिर्फ पीपीआर रोग से 65.3 से 66.9 करोड़ रुपये का घाटा हो रहा है। शूकरों में होने वाले रोग शूकर ज्वर से प्रति वर्ष करीब 400 करोड़ रूपये का नुकसान हो रहा है। वैश्वीकरण और जलवायु परिवर्तन के परिणामस्वरूप वर्तमान में विभिन्न प्रकार के पशु रोगों की वृद्धि हुई है। इतना ही नहीं, पिछले कुछ दशकों में रोगाणुओं के अनुकूलन एवं विकास के कारण पुराने रोगों के फिर से उभरने एवं नये व विदेशी रोगों के प्रकोप का खतरा भी बढ़ गया है। पशुओं में होने वाले रोगों को कम करने के लिए रोगों की जानकारी के साथ–साथ इनकी रोकथाम की उचित जानकारी भी अतिआवश्यक है।

पशुचिकित्सा के विभिन्न आयाम

सरकार द्वारा पशुपालकों को समय–समय पर जानकारी प्रदान करने के लिए कई प्रकार के वेबपोर्टल एवं ऐप्स का निर्माण किया गया है। इन ऐप्स एवं पोर्टल के माध्यम से पशुपालक आवश्यक जानकारी को स्वयं ढूंढकर प्राप्त कर लेते हैं। किसान कॉल सेंटर द्वारा भी पशुपालक एवं अन्य हितधारक विषय विशेषज्ञों से सलाह लेते हैं। परन्तु कई बार यह भी देखा गया है कि पशुपालक डॉक्टरों से स्वयं बातचीत करना चाहते हैं एवं कॉल लगाने पर यदि कॉल व्यस्त आती है तो परेशान हो जाते हैं। यदि पशु चिकित्सक की तरफ से देखें तो हर वक्त कॉल उठाना संभव नहीं होता एवं कई पशुपालकों की कॉल का जवाब डॉक्टर नहीं दे पाते हैं। कॉल के व्यस्त होने की स्थिति में अथवा पशुचिकित्सक के कॉल को न उठा पाने की स्थिति में उचित समय पर जानकारी न मिलने के कारण पशुपालकों को आर्थिक हानि का सामना करना पड़ता है।

पशु रोग एवं उनके लक्षणों को कई बार पशुपालक सही से विस्तार में विशेषज्ञों को टेलीफोन द्वारा नहीं बता पाते हैं एवं ऐसे में पशुचिकित्सक रोगी पशु के लक्षणों को देखकर ही उपचार करना चाहते हैं। इन्ही सब समस्याओं का समाधान करने के लिए तथा पशुपालकों एवं अन्य पशुचिकित्सा से संबंधित हितधारकों की समस्याओं का समय पर समाधान करने के लिए आईवीआरआई ऑनलाइन वेटरनरी क्लीनिक ऐप का निर्माण किया गया है।

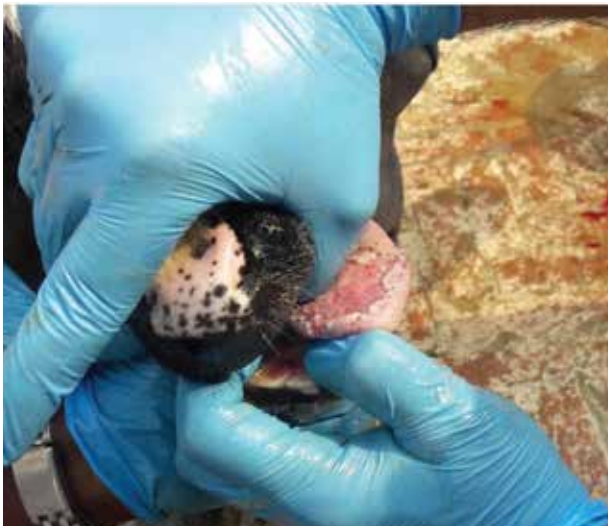

चिकित्सा क्रिया

आईवीआरआई ऑनलाइन वेटरनरी क्लीनिक ऐप

भारतीय पशुचिकित्सा अनुसंधान संस्थान (आईवीआरआई) ने ऑनलाइन वेटरनरी क्लीनिक पशुचिकित्सालय की सुविधा शुरू की है। इस ऑनलाइन वेट क्लीनिक ऐप के माध्यम से पशुओं के बीमार होने पर पशुपालक अपनी समस्या का निस्तारण करा सकते हैं। इस ऐप में रजिस्ट्रेशन कराने के बाद किसान अपने पशुओं की सामान्य प्रसव समस्याएं, सर्जिकल समस्याएं, प्रजनन संबंधी समस्याएं, परजीवी समस्याएं, डायग्नोस्टिक एवं पैथोलाजी सेवाएं, प्रबंधन संबंधित, टीककारण संबंधित और राशन एवं चारा संबंधी परामर्श बिना अस्पताल जाए ऑनलाइन ले सकते हैं।

आईवीआरआई–ऑनलाइन वेटरनरी क्लीनिक ऐप आईवीआरआई परिसर में स्थित रेफरल बहुआयामी पशु चिकित्सालय में दी जाने वाली सेवाओं का एक ऑनलाइन प्रारूप है। ऐप का प्रमुख उद्देश्य आईवीआरआई पशु चिकित्सालय सेवाओं को सरल और सुगम तरीके से पशुपालकों को उनके घर की सहूलियत पर उपलब्ध कराना है। ताकि पशुपालकों का आईवीआरआई पशु चिकित्सालय तक पशु को लाने का खर्च, समय तथा मेहनत बच सके। यह ऐप पशु चिकित्सा, पशु सर्जरी, पशु प्रजनन, पशु विकृति विज्ञान, परजीवी विज्ञान, पशु पोषण, नस्ल सुधार और प्रबंधन के क्षेत्र में अग्रणी वैज्ञानिक विशेषज्ञों से टेली–परामर्श/सलाह के लिए सीधी पहुंच प्रदान करता है। ऐप पशुपालक/पशुचिकित्सा से संबंधित अन्य पेशेवरों को आईवीआरआई विशेषज्ञों के साथ अपने पशु की उम्र, लिंग, वजन जैसी बुनियादी जानकारी के साथ–साथ तस्वीर और वीडियो साझा करने का भी प्रावधान देता है। ताकि संस्थान के विशेषज्ञ पशु की स्थिति का उचित निदान कर सकें तथा उचित परमर्श द्वारा प्रभावी उपचार सुनिश्चित कर सकें। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्–भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर, बरेली के 10वें दीक्षांत समारोह में दिनांक 23 अगस्त, 2022 को केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री नरेंद्र सिंह तोमर के

URL: https://apksos.com/app/net.iasri.ivri.animalscience.ovcca

क्यूआर कोड

करकमलों द्वारा आनलाइन वेटरनेरी क्लीनिक ऐप का अनावरण किया गया।

ऐप में शामिल प्रजातियां

ऐप ऑनलाइन टेलीकंसल्टेशन के लिए गाय, भैंस, भेड़, बकरी, शूकर, मुर्गी, घोड़ी, खच्चर, कुत्तों और बिल्लियों के पालकों को सहायता प्रदान करता है।

ऐप में विभिन्न श्रेणी की समस्याओं हेतु उपलब्ध विकल्प

यह ऐप पशुधन संबंधी विभिन्न समस्याओं जैसे सामान्य स्वास्थ्य समस्याओं, सर्जिकल समस्याओं, प्रजनन संबंधी समस्याओं, परजीवी रोगों, प्रबंधन संबंधी समस्याओं, पोषण संबंधी, टीकाकरण और नैदानिक रोग संबंधी सेवाओं के लिए पशु चिकित्सकों से जुड़ता है।

ऑनलाइन वेटरनरी क्लीनिक ऐप का उपयोग कैसे करें

- ऐप के माध्यम से सेवाओं का लाभ उठाने से पहले किसान को एक खाता बनाना होगा।
- एक बार जब वह एक खाता बना लेता है, तो वह बाद में उत्पन्न लॉग–इन विवरण के साथ ऐप का उपयोग कर सकता है।
- एक बार ऑनलाइन पशु चिकित्सा क्लीनिक में लॉग–इन करने के बाद, किसान को पहले उस प्रजाति का चयन करना होगा जिसके लिए वह ऑनलाइन परामर्श प्राप्त करना चाहता है।
- फिर ऐप विभिन्न पशुधन समस्याओं का एक मेन्यू प्रदर्शित करेगा। किसानों को संबंधित समस्या/मुद्दे पर क्लिक करना होगा।
- एक बार समस्या पर क्लिक करने के बाद ऐप विशेष दिन पर टेली–परामर्श के लिए उपलब्ध विशेषज्ञों की एक सूची प्रदर्शित करेगा।
- किसान तब ऑनलाइन परामर्श के लिए डॉक्टरों के पैनल में से चुन सकते हैं।
- टेलीकंसल्टेशन का लाभ उठाने के लिए ऐप उपयोगकर्ता से पूछेगा कि क्या यह पहला परामर्श है या यह उसके पशुधन का अनुवर्ती परामर्श है।

यदि यह पहला परामर्श है, तो किसानों को कुछ विवरण जैसे पशु का लिंग, वजन, क्या स्थानीय चिकित्सक के साथ इलाज किया जा रहा है, आदि दर्ज करना होगा। इन विवरणों को दर्ज करने के बाद, ऐप उपयोगकर्ता को डॉक्टर के साथ अपॉइंटमेंट बुकिंग के लिए समय चुनने के लिए कहेगा। एक बार अपॉइंटमेंट बुक हो जाने के बाद उपयोगकर्ता अब या तो वॉयस कॉल या वीडियो कॉल के माध्यम से पहले से बुक किए गए अपॉइंटमेंट शेड्यूल पर डॉक्टर से परामर्श कर सकता है। ■

THE ONE THING THAT MAKES ALL OUR PRODUCTS DELIGHTFULLY DELICIOUS IS THE GOODNESS OF OUR MILK.

sweet rich creamy happiness.

happiness of juicy mangoes with mishti doi.

soft creamy delicious happiness.

For more information, call 1800-1801-018 or visit: www.motherdairy.com

MOTHER DAIRY®

cheesy
wholesome
tasty
happy.

rich
creamy
happiness.

happy mix of
real fruits
with delicious
curd.

thick rich
fruity
happiness.

the happiest
mix of healthy
and tasty.

*Visual Depiction Only

पशुपालन

पशुपालकों के लिए
(सौजन्यः पशुचिकित्सा एवं पशु

सितंबर

- हरे चारे की बहु–उपलब्धता के कारण पशुओं में अधिक सेवन से संबंधित समस्याओं से बचने के लिए पशुओं को बाहर चरने के लिए नहीं भेजें।
- हरे चारे से साईलेज बनाएं। हरे चारे के साथ सूखे चारे को मिलाकर खिलायें।
- चारागाह/बाड़े की साफ–सफाई का विशेष ध्यान रखें। समय पर कीटनाशक दवाओं जैसे मैलाथियान का घोल फर्श व दीवारों पर छिड़कना चाहिए।
- चारे का उपयुक्त भण्डारण सूखे व ऊंचे स्थान पर करें।
- वातावरणीय तापमान में उतार–चढ़ाव से पशुओं को बचाने के उपायों पर ध्यान दें।
- पशुओं को भीगने नहीं दें।
- अच्छा मानसून होने पर पशुशाला में जल भराव समस्या व आर्द्रता जनित रोगों के संक्रमण की संभावना रहती है, अतः जल निकासी का समुचित प्रबंधन करें। पशुओं को यथासंभव सूखे व ऊंचे स्थानों पर रखें।
- आवश्यक टीकाकरण जरूर कराएं।

अक्टूबर

- ☞ परजीवी नाशक दवा/घोल देने का यही उपयुक्त समय है। परजीवी नाशक दवा को हर बार बदल–बदल कर उपयोग में लें।
- ☞ चारे की सही समय पर खरीद–फरोख्त व संग्रहण पर पूरा ध्यान दें।
- ☞ इस माह से सर्दी का मौसम शुरू हो जाता है, अतः पशुओं को सर्दी से बचाने का उचित प्रबन्ध करें।
- ☞ राज्य के कई स्थानों पर हरे चारे की उपलब्धता बढ़ने पर पशु को आहार में हरा चारा ज्यादा न दें तथा सूखे चारे की मात्रा बढ़ाकर दें।
- ☞ हरे चारे को अधिक मात्रा में खाने से पशुओं में हरे रंग की दस्त अथवा एसिडोसिस की समस्या हो सकती है।
- ☞ मुंहपका–खुरपका रोग होने पर पशु के प्रभावित भाग को लाल दवा 1 प्रतिशत घोल से उपचारित करना चाहिए।
- ☞ सर्दी के मौसम में अधिकतर भैंस मद में आती हैं, अतः भैंस के मद में आने पर समय से ग्याभिन करवाएं।
- ☞ पशुओं को लवण–मिश्रण निर्धारित मात्रा में दाने या बांटे में मिलाकर दें।

प्रश्नोत्तरी

गोपशुओं में कृत्रिम गर्भाधान व प्रजनन

प्रस्तुतिः संपादकीय डेस्क

1. प्राकृतिक सेवा (नेचुरल सर्विस) की अपेक्षा कृत्रिम गर्भाधान (एआई) के क्या लाभ हैं?

कृत्रिम गर्भाधान के साथ एक साँड प्रति वर्ष 20,000 से अधिक गायों का प्रजनन कर सकता है, जबकि प्राकृतिक सेवा के साथ 200 से अधिक गायों को प्रजनन नहीं किया जा सकता है। इसलिए जब कृत्रिम गर्भाधान का पालन किया जाता है तो समान संख्या में गायों के लिए प्राकृतिक सेवा की तुलना में बहुत कम साँड की आवश्यकता होती है। इसके अलावा, इससे जननांग की बीमारियों तथा हानिकारक अप्रभावी एलील्स के संचरण का खतरा बहुत कम हो जाता है। इसके अतिरिक्त एआई किफायती है । एक उच्च वंशावली साँड का उपयोग उसकी मृत्यु के बाद भी किया जा सकता है, यदि उसके जमे हुए वीर्य की खुराक को संग्रहित किया जाता है और जमे हुए वीर्य की खुराक को महाद्वीपों के बीच साझा भी किया जा सकता है।

2. यह प्राकृतिक सेवा से कैसे अलग है?

प्राकृतिक सेवा में गाय को प्रजनन के लिए सांड के पास ले जाया जाता है, जबकि कृत्रिम गर्भाधान में प्रशिक्षित एआई तकनीशियन द्वारा किसी मान्यता प्राप्त वीर्य केंद्र पर रखे गए सांड की हिमीकृत वीर्य डोज से गाय का गर्भाधान किया जाता है।

3. क्या एआई बांझपन या रिपीट ब्रीडिंग का एक उपचार है?

नहीं, कृत्रिम गर्भाधान बांझपन या रिपीट ब्रीडिंग का एक उपचार नहीं है। यह रोग मुक्त आनुवंशिक रूप से

श्रेष्ठ वंशावली वाले सांड के वीर्य से पशु को गर्भित करने की एक कृत्रिम विधि है। यह प्राकृतिक सेवा के माध्यम से होने वाले रोगों की रोकथाम करने में मदद करता है। यदि कोई पशु बांझपन के कारण प्राकृतिक सेवा के माध्यम से गर्भित नहीं हो पा रहा है, तो वह कृत्रिम गर्भाधान के माध्यम से भी गर्भित नहीं हो पाएगा।

4. क्या पशु के एक बार गर्मी (हीट) में आने पर एक से अधिक डोज का उपयोग करने का लाभ है?

एक हिमीकृत वीर्य डोज स्ट्रॉ (0.25 मिलीलीटर क्षमता) एक पशु के सफल गर्भधारण के लिए पर्याप्त है, यदि सही समय पर पशु के गर्मी में आने पर उत्तम गुणवत्ता के वीर्य का उपयोग करके तथा एसओपी (मानक प्रक्रिया) का पालन करते हुए सही एआई तकनीक का उपयोग करके एआई किया गया है। हालांकि, कुछ मामलों में यदि गर्मी की अवधि सामान्य अवधि (12–18 घंटे) से अधिक बढ़ा दी जाती है, तो ओव्यूलेशन में भी देरी होती है और ऐसे मामलों में, 24 घंटे के बाद दूसरे गर्भाधान की आवश्यकता हो सकती है।

5. क्या एआई के बाद पशु को सांड के पास ले जाना चाहिए?

नहीं, पशु को एआई के बाद कभी भी सांड के पास नहीं ले जाना चाहिए।

6. एआई की आदर्श सफलता दर क्या है?

40 प्रतिशत और उससे अधिक एआई की सफलता दर आदर्श मानी जाती है।

7. क्या एआई भैंसों में सफल है?

हां, भैंसों में एआई गायों की तरह ही सफल है। इसमें केवल यह समस्या आती है कि वे अक्सर गर्मी में आने के लक्षण गर्मी के दौरान बहुत खुलकर प्रदर्शन नहीं करती हैं।

8. यदि क्षेत्र में कई एआई सर्विस प्रदाता हैं, तो सही एआई सर्विस प्रदाता कैसे चुनना चाहिए? जब एआई तकनीशियन पशु को गर्भित कर रहा है तो मुझे क्या देखना चाहिए?

एआई तकनीशियन यानी एआईटी जा ए अथवा बी श्रेणी के वीर्य केंद्र द्वारा उत्पादित हिमीकृत वीर्य का उपयोग करता है और इसे उचित क्रायोकेन्स में स्टोर करके प्रयोग में लाता है (न कि पॉकेट या थर्मोस में अथवा पानी में या बर्फ पर), केवल उसे ही चुना जाना चाहिए। वीर्य केंद्र का नाम सीमन स्ट्रॉ पर लिखा होता है, किसानों को सांड की वंशावली और वीर्य केंद्र की श्रेणी का पता लगाने के लिए सायर निर्देशिका देखने का आग्रह करना चाहिए। वहीं, एआईटी द्वारा एआई किए जाने के दौरान यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि एआईटी एआई के एसओपी का पालन कर रहा है। उचित परिणाम पाने के लिए एआई में क्या करें और क्या न करें का पालन करने की आवश्यकता है।

9. गर्मी में आए पशुओं का पता कैसे लगाएं? एआई का सही समय क्या है? सायलेंट हीट क्या है?

पशुओं के गर्मी में आने के स्पष्ट लक्षण देखे जा सकते हैं, जैसे माउंटिंग के लिए अन्य पशुओं की ओर बढ़ते हुए, माउंटिंग के लिए खड़े होना, योनि (वल्व) में सूजन, बार–बार पेशाब करना, बेचैनी और बेलोइंग (चिल्लाना)। सर्वाइकल म्युकस डिस्चार्ज की लंबी और साफ लड़ी (स्ट्रैंड) योनि से लटकती नजर आएगी। पशु खाना कम कर देगी और दूध उत्पादन में कमी आ जाएगी। किसी पशु का गर्भाधान करने का सही समय गर्मी में आने का पता चलने के 12 घंटे बाद होता है। सुबह के समय गर्मी में पाए गए पशु का शाम को गर्भाधान करना चाहिए और शाम को गर्मी

में पाए गए पशु का अगली सुबह गर्भाधान करना चाहिए। हालांकि, गर्मी में आए पशु के हीट स्टेज और रेक्टल पल्पेशन के माध्यम से सर्वाइकल डिस्चार्ज की गुणवत्ता की पुष्टि करने के बाद पशु के एआई किए जाने का अंतिम निर्णय लिया जाना चाहिए। भैंसें अक्सर गर्मी में आने के उचित संकेत प्रदर्शित नहीं करती हैं, जिसे साइलेंट हीट कहा जाता है। साइलेंट हीट में पशु गर्मी में आने के कोई संकेत नहीं देता है अथवा कुछ ही व्यावहारिक संकेत प्रदर्शित करता है और वह भी बहुत कम अवधि के लिए।

10. राज्य की प्रजनन नीति क्या है? इसका पालन क्यों किया जाना चाहिए?

हर राज्य ने राज्य की भौगोलिक और जलवायु परिस्थितियों और राज्य में विभिन्न नस्लों के वितरण के आधार पर अपनी प्रजनन नीति को निर्धारित किया है। प्रजनन नीति एक दिशानिर्देश है, जिसमें यह बताया गया है कि किस राज्य की कृषि जलवायु की स्थिति में कौन सा नस्ल और नस्ल संयोजन अथवा विदेशी रक्त का स्तर सबसे उपयुक्त है। अपने पशुओं से अधिक उत्पादन प्राप्त करने और राज्य में उपलब्ध नस्ल के संरक्षण के लिए इसका पालन किया जाना चाहिए ।

11. विभिन्न प्रकार के पशुओं के प्रजनन के लिए किस प्रकार के वीर्य का उपयोग किया जाना चाहिए? क्या एआईटी वीर्य के सभी प्रकार और नस्लों को लाते हैं ताकि पशु के लिए सबसे अच्छा विकल्प चना जा सके। सायर निर्देशिका क्या है? क्या यह प्रत्येक एआईटी के पास उपलब्ध है?

गैर–वर्णित पशुओं के उन्नयन और अच्छी तरह से परिभाषित नस्लों के लिए उपयोग किया जाने वाला वीर्य राज्य की प्रजनन नीति के अनुसार होना चाहिए।

केवल ए और बी श्रेणी के वीर्य केंद्रों से खरीदे गए वीर्य का उपयोग किया जाना चाहिए। राज्य की प्रजनन नीति के अनुसार सभी एआईटी हमेशा सभी वीर्य नहीं ले जा सकते हैं। इसलिए एक जागरूक और प्रगतिशील किसान होने के नाते सतर्क रहना चाहिए और सांडों की नस्ल, विदेशी रक्त स्तर और वंशावली विवरण जानने के लिए जोर देना चाहिए, जिसका वीर्य आपके पशु के प्रजनन के लिए इस्तेमाल किया जा रहा है। सायर निर्देशिका एक रिकॉर्ड है, जिसमें वीर्य केंद्र में प्रत्येक सांड की पूरी वंशावली विवरण उपलब्ध होता है। किसान एआई सांड के बारे में अधिक जानने के लिए 'इनाफ' सायर निर्देशिका की जांच कर सकते हैं। आदर्श रूप में यह एआई सर्विस प्रदाता के पास उपलब्ध होनी चाहिए, यदि उपलब्ध नहीं है तो किसान सेवा प्रदाता को वीर्य केंद्र से प्राप्त करने के लिए कह सकता है।

12. उत्तम गुणवत्ता वाला वीर्य क्या है? यह कैसे पता लगाएं कि एआईटी द्वारा उपयोग किए जाने वाले वीर्य का उत्पादन 'ए' या 'बी' श्रेणी के वीर्य केंद्र द्वारा किया गया है अथवा नहीं?

ए और बी श्रेणी के वीर्य केंद्रों से खरीदा गया वीर्य डोज उत्तम गुणवत्ता का माना जाता है। हालांकि किसान स्ट्रॉ पर छपे बुल आईडी और वीर्य केंद्र के

नाम की जांच कर सकते हैं। सायर निर्देशिका में आमतौर पर वीर्य केंद्र को दी गई श्रेणी का विवरण उपलब्ध होता है।

13. पशुओं के कान में टैग क्यों लगाया जा रहा है? यह मेरे लिए कैसे फायदेमंद है?

पशुओं के कान में टैग लगाया जाता है, ताकि देश के हर पशु को एक विशिष्ट पहचान संख्या दी जा सके। एक बार जब पशु के कान में टैग लगा दिया जाता है तो उस पशु पर की गई सभी गतिविधियों (एआई, गर्भावस्था निदान, ब्यांत, दूध की रिकॉर्डिंग, टीकाकरण, स्वास्थ्य की जानकारी) को राष्ट्रीय डेटाबेस में दर्ज किया जा सकता है। इस तरह प्रत्येक पशु पर की गई सभी गतिविधियों का पूरा रिकॉर्ड उपलब्ध होगा। इससे यह पहचानने में मदद मिलेगी कि किस सांड ने सबसे अच्छा प्रदर्शन करने वाले संतानों का उत्पादन किया है और इस प्रकार पशुओं के प्रजनन के लिए सर्वश्रेष्ठ सांडों की मांग व चयन किया जा सकेगा। इसके अलावा, यह बीमा, खरीद और पशु की बिक्री के दौरान फायदेमंद होगा क्योंकि इससे प्रामाणिक जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

14. सेक्स्ड सीमन (लिंग निर्धारित वीर्य) क्या है? यह कहां उपलब्ध है? इसका क्या मूल्य है? क्या यह सभी एआई तकनीशियनों के पास उपलब्ध है? कैसे पता लगाएं कि क्या मेरे पशु के लिए सेक्स्ड सीमन का उपयोग किया गया है? क्या यह सभी नस्लों के पशुओं और भैंसों के लिए भी उपलब्ध है? पारंपरिक वीर्य के प्रति सेक्स्ड सीमन का उपयोग करने के क्या लाभ हैं? सफलता दर क्या है?

सेक्स्ड सीमन ऐसा वीर्य है जिसमें मुख्य रूप से एक्स या वाई जीवित शुक्राण (स्पर्मेटोजोआ) लगभग 80–90 प्रतिशत शुद्धता के साथ वांछित सेक्स की संतानों का उत्पादन करने के लिए उपलब्ध होते हैं। वर्तमान में, भारत में 5 वीर्य केंद्र सेक्स्ड सीमन का उत्पादन कर रहे हैं। सेक्स्ड सीमन रु. 900 से रु. 2,000 प्रति डोज की दर से उपलब्ध है। हालांकि, कुछ राज्य इसे रु.100–300 की रियायती दर पर उपलब्ध करा रहे हैं। सभी एआईटी के पास सेक्स्ड सीमन उपलब्ध नहीं होते हैं। यह पता लगाने के लिए कि सेक्स्ड सीमन का उपयोग किया गया है या नहीं, स्ट्रॉ से सेक्स्ड सीमन के स्रोत की विश्वसनीयता की जांच की जा सकती है। गायों (गिर, साहीवाल, थारपारकर, कांकरेज, रेड सिंधी, हरियाना, गंगातीरी और शुद्ध एचएफ और जर्सी इत्यादि) और भैंस (मेहसाना, मुर्रा और जाफराबादी) की कुछ नस्लों के लिए सेक्स्ड सीमन उपलब्ध हैं। इसके अलावा, वीर्य केंद्र नस्ल की मांग पर अपने कैटलॉग में नई नस्लों को शामिल कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त, आयातित सेक्स्ड सीमन के डोज भी कुछ संस्थाओं के पास उपलब्ध हैं। सेक्स्ड सीमन का उपयोग पारंपरिक सीमन स्ट्रॉ की तुलना में वांछित लिंग की 80–90 प्रतिशत सटीकता की गारंटी देता है, जहां नरःमादा अनुपात लगभग 50:50 है। चूंकि पारंपरिक सीमन स्ट्रॉ की तुलना में सेक्स्ड सीमन स्ट्रॉ में स्पर्म कंसंट्रेशन (शुक्राणु सांद्रता) कम होता है और सेक्सिंग की प्रक्रिया से सेक्स्ड स्पर्म को काफी चोट पहुंचती है, इसलिए सामान्य वीर्य की तुलना में सेक्स्ड सीमन के साथ गर्भधारण के दर में लगभग 10 प्रतिशत की कमी होती है। परंतु, प्रौद्योगिकी और सेक्सिंग उपकरणों के विकास के साथ गर्भाधान दर के मामले में सेक्स्ड सीमन और पारंपरिक वीर्य के बीच अंतर कम हो रहा है। ■

(साभारः एनडीडीबी)

'दुग्ध सरिता' के सदस्य बनें
घर बैठे पत्रिका पाएं

इंडियन डेरी एसोसिएशन
का प्रकाशन

दुग्ध सरिता
(द्विमासिक पत्रिका)
अंकों की संख्या : 6
वार्षिक सदस्यता शुल्क रु. 450/–
कीमत रु. 75/– प्रति अंक
साधारण डाक से निःशुल्क डिलीवरी, कोरियर या रजिस्टर्ड डाक का शुल्क रु. 40/– प्रति अंक

दुग्ध सरिता : देश में डेरी सेक्टर का विकास आईडीए का मिशन है और इसके लिए हिंदी भाषा में डेरी किसानों को लक्ष्य करते हुए इस द्विमासिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ किया गया है। यह पत्रिका डेरी सेक्टर के सभी संबंधितों की एक बड़ी मांग और जरूरत पूरी करती है। 'दुग्ध सरिता' डेरी किसानों की समस्याओं और मुद्दों पर केंद्रित है और संबंधित सरकारी योजनाओं की जानकारी भी प्रदान करती है।

'दुग्ध सरिता' की 4,000 या अधिक प्रतियां प्रकाशित की जा रही हैं। इसे सहकारी समितियों और निजी डेरी सेक्टर के संस्थागत सदस्यों सहित आईडीए के सभी सदस्यों, शैक्षणिक संस्थानों और सभी संबंधित सरकारी विभागों को प्रेषित किया जा रहा है। इसके माध्यम से नई तकनीकों, सर्वोत्तम दूध प्रक्रियाओं, डेरी प्रसंस्करण और आधिक दूध उत्पादन सहित सभी पहलुओं पर जानकारी प्रदान की जा रही है। 'दुग्ध सरिता' में लेख, समाचार व विचार, केस स्टडीज, सफलता गाथाएं, फोटो फीचर तथा अन्य उपयोगी सामग्री प्रकाशित की जाएगी। इसका उद्देश्य डेरी पशुओं के पालन से लेकर दूध उत्पादन, परिवहन, प्रसंस्करण तथा बिक्री के सभी आयामों को शामिल करते हुए डेरी किसानों और डेरी व्यवसाय को प्रगति तथा उन्नति के पथ पर अग्रसर करना है।

आईडीए द्वारा 'इंडियन डेरीमैन' और 'इंडियन जर्नल ऑफ डेरी साइंस' नामक दो अन्य पत्रिकाओं का प्रकाशन भी किया जाता है, जो राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित हैं।

सदस्यता फार्म

हाँ, मैं सदस्य बनना चाहता हूं :

दुग्ध सरिता विवरण...../एक वर्ष/दो वर्ष/ तीन वर्ष/ प्रतियों की संख्या ☐
(कृपया 'टिक' करें)

पत्रिका भेजने का पता (अंग्रेजी में लिखें तो कैपिटल लैटर प्रयोग करें)

संस्थान / व्यक्ति का नाम.....

संपर्क व्यक्ति का नाम व पदनाम (संस्थान सदस्यता के लिए).....

पता.....

शहर.....

राज्य.....पिन कोड.....ई–मेल.....

फोन.....मोबाइल.....

संलग्न बैंक ड्राफ्ट/स्थानीय चेक (ऐट पार) नं.....

बैंक.....इंडियन डेरी एसोसिएशन, नई दिल्ली को देय

एनईएफटी विवरण (ट्रांसैक्शन आईडी.....तारीख.....राशि.....)

(हस्ताक्षर)

कृपया इस फॉर्म को भरकर डाक से भेजें या ई–मेल करें।

सेक्रेटरी (ऐस्टेबलिशमेंट), इंडियन डेरी एसोसिएशन, आईडीए हाउस, सेक्टर–IV आर. के. पुरम, नई दिल्ली–110022

फोन : 26179781, 26170781 ईमेल : **dsarita.ida@gmail.com** वेबसाइट : **www.indairyasso.org**

एनईएफटी विवरण : खाता नाम : इंडियन डेरी एसोसिएशन बचत खाता संख्या : 90562170000024 आईएफएससी : **CNRB0019009**
बैंक : केनरा बैंक ; शाखा; दिल्ली तमिल संगम बिल्डिंग, सेक्टर V आर. के. पुरम, नई दिल्ली–110022

पोषण

घोड़ी का दूध मानव स्वास्थ्य के लिए उत्तम

[1]अक्षय रामानी, [2]राजेश देशमुख एवं [3]डॉ. रमन सेठ

डेरी रसायन विभाग, राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल, हरियाणा–132001

दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों में बड़ी संख्या में जानलेवा स्थितियों के उपचार में घोड़ी का दूध एक उपयोगी घटक है। यह देखा गया है कि घोड़ी का दूध पीने से मधुमेह, खाद्य एलर्जी, कैंसर, हेपेटाइटिस बी और सी, ऑटिज्म, सोरायसिस, गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल विकार, उच्च रक्त कोलेस्ट्रॉल और तपेदिक सहित विभिन्न रोगों/विकारों का इलाज करने के साथ–साथ प्रतिरक्षा प्रणाली को बढ़ाने में मदद मिल सकती है। घोड़ी के दूध के संभावित चिकित्सीय उपयोग और इसमें शामिल अद्वितीय घटकों की जांच करने वाले विद्वानों के लेखों की मात्रा में हाल ही में वृद्धि हुई है। कॉस्मेटिक उद्योग ने घोड़ी के दूध के लाभकारी लाभों पर भी ध्यान दिया है और परिणामस्वरूप अपने उत्पादों की व्यापक विविधता में इसका उपयोग करना शुरू कर दिया है। हालाँकि, दूध को पाश्चुरीकृत और वायरस से मुक्त अवस्था में लिया जाना चाहिए, उसके बाद ही उपयोग करना चाहिए।

ठंडे मध्य एशियाई मैदानों में घोड़ी का दूध मुख्य डेरी उत्पाद है। इसके अलावा यह प्रागैतिहासिक काल से ही मंगोलिया के लोगों के लिए मुख्य खाद्य पदार्थों का एक महत्वपूर्ण स्रोत रहा है। घोड़ों का बड़े पैमाने पर दूध निकाला जाता है और इन घोड़ों से उत्पादित दूध कई देशों विशेषरूप से मंगोलिया, कजाकिस्तान, किर्गिस्तान, रूस और चीन की क्षेत्रीय खाद्य अर्थव्यवस्थाओं का एक अनिवार्य घटक है। अनुमान के मुताबिक दुनिया भर में लगभग 30 मिलियन लोग घोड़ी के दूध का सेवन करते हैं। भारत में डेरी आधारित घोड़ा पालन को बढ़ाने के उद्देश्य से और आज के स्वास्थ्य के प्रति जागरूक उपभोक्ता का विश्वास जीतने के लिए घोड़ी के दूध को औषधीय भोजन के रूप में या सफेद स्वास्थ्य पेय के रूप में उपयोग करने के लिए विभिन्न शोध संस्थान कार्यरत हैं। यह अनुशंसा की जाती है कि जिन शिशुओं को गाय के दूध में पाए जाने वाले प्रोटीन के प्रति असहिष्णुता है, उन्हें इसके बजाय घोड़ी का दूध पिलाया जाए।

परिचय

दूध और दूध से बने उत्पाद मनुष्यों द्वारा उपभोग किए जाने वाले अधिकांश आवश्यक पोषक तत्व प्रदान करते हैं। गोजातीय दूध दुनिया भर में पैदा होने वाले दूध की कई किस्मों में से एक है, जो बहुमत (85%) का योगदान देता है, उसके बाद भैंस (11%), बकरी (2.3%), भेड़ (1.4%), और ऊंट (0.2%) का योगदान है। अन्य प्रजातियों के दूध उत्पादन के संबंध में कोई आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं, जैसे कि घोड़ी, गधे, याक, आदि। दूसरी ओर यह मान लेना सुरक्षित है कि ये प्रजातियाँ कुल उत्पादित दूध का 0.1% से कम का उत्पादन करती हैं।

घोड़े (*इक्वस कैबेलस*), हजारों वर्षों से लोगों द्वारा परिवहन के साधन के रूप में उपयोग किए जाते रहे हैं। घोड़ा भारत में एक बहुत ही उपयोगी जानवर है, खासकर भारतीय सेना और पुलिस बल के लिए। इसके अलावा, मध्य एशिया के ठंडे क्षेत्रों में रहने वाले लोग पोषण के प्राथमिक

बहुउपयोगी घोड़ी का दूध

स्रोत के रूप में घोड़ों के दूध का उपभोग करते हैं। प्रागैतिहासिक काल से मंगोलिया के लोग इस दूध का उपयोग अपने आहार के लिए आवश्यक पोषक तत्वों के महत्वपूर्ण स्रोत के रूप करते रहे हैं। आज तक अधिकांश लोगों को घोड़ी के दूध की सीमित समझ है। दूसरी ओर प्राचीन यूनान के साहित्य ने स्पष्ट किया कि वे इससे मिलने वाले पोषण और स्वास्थ्य लाभों से अवगत थे। इसके अलावा, हाल के वैज्ञानिक शोधों ने प्रदर्शित किया है कि गाय के दूध में पाए जाने वाले प्रोटीन से एलर्जी वाले व्यक्तियों द्वारा घोड़ी के दूध का सेवन एक बहुत प्रभावी उपचार विकल्प है। इसके परिणामस्वरूप घोड़ी के दूध की लोकप्रियता एक पेय के रूप में एक नया आयाम प्राप्त कर रही है।

घोड़ी के दूध की उपज

घोड़ी के थन के आकार के कारण अधिकतम दुग्ध उत्पादन के लिए प्रतिदिन पांच से छह बार दुहने की आवश्यकता होती है। घोड़ी का दूध औसतन 8–12 किग्रा प्रति दिन निकालना अवस्था पर निर्भर करता है। घोड़ी के दूध में 10–12% ठोस पदार्थ होते हैं। इस दूध में गाय के दूध की तुलना में अधिक लैक्टोज, कम प्रोटीन, खनिज और वसा होता है।

सारणी 1: विभिन्न प्रजातियों के दूध की औसत रासायनिक संरचना

घटक	घोड़ा	गाय	ऊंट	याक	मानव
वसा	1.3	4.0	4.5	6.5	4.0
प्रोटीन	2.1	3.4	3.5	5.1	1.9
कार्बोहाइड्रेट	6.4	4.8	4.4	4.4	6.5
खनिज	0.4	0.7	0.7	0.8	0.2

वसा

घोड़ी के दूध में वसा की मात्रा मानव और गाय के दूध की तुलना में काफी कम होती है। वसा घोड़ी के दूध में कुल ऊर्जा का केवल 25% योगदान देता है। जबकि यह क्रमशः मानव दूध और गोजातीय दूध में कुल ऊर्जा का 50% योगदान देता है। एक किलोग्राम घोड़ी के दूध में निहित ऊर्जा की मात्रा 2.0 और 2.5 एमजे के बीच होती है। गोजातीय दूध

घोड़ी के दूध के अनेक उपयोग

की तुलना में घोड़ी के दूध में फॉस्फोलिपिड्स का प्रतिशत अधिक होता है और कुल ट्राइग्लिसराइड की मात्रा कम होती है (81%)। गोजातीय दूध की तुलना में घोड़ी के दूध में पाए जाने वाले मुक्त फैटी एसिड का प्रतिशत काफी अधिक (9%) होता है। मानव दूध (14–20 मिलीग्राम/100 मिली) और गोजातीय दूध (13–31 मिलीग्राम/100 मिली) की तुलना में घोड़ी के दूध में पाए जाने वाले कोलेस्ट्रॉल की मात्रा अपेक्षाकृत कम (5–8.8 मिलीग्राम/100) मिली होती है।

घोड़ी के दूध की चर्बी में गोजातीय और मानव दूध की तुलना में अधिक पामिटोलिक, लिनोलिक और लिनोलेनिक एसिड होते हैं, लेकिन स्टीयरिक और ओलिक एसिड कम होते हैं। घोड़ी के दूध में असंतृप्त वसीय अम्लों की सांद्रता गोजातीय दूध की तुलना में अधिक होती है।

कार्बोहाइड्रेट (लैक्टोज)

दूध में कार्बोहाइड्रेट का एक अनूठा रूप होता है, जिसे लैक्टोज के रूप में जाना जाता है, जो डी–ग्लूकोज और डी–गैलेक्टोज से बना एक डिसैकराइड है। लैक्टोज दूध में पाई जाने वाली प्राथमिक शर्करा है। घोड़ी के दूध में लैक्टोज का स्तर गोजातीय दूध की तुलना में काफी अधिक होता है, लेकिन वे मानव दूध की तुलना में आश्चर्यजनक रूप से तुलनीय है। फिर भी, लैक्टोज असहिष्णुता एशिया की आबादी के एक महत्वपूर्ण हिस्से को पूरी तरह से प्रभावित करती है। घोड़ी के दूध में सियालिक एसिड की सांद्रता (5 मिलीग्राम प्रति 100 मिली) गोजातीय और मानव दूध की तुलना में कम है।

प्रोटीन

घोड़ी के दूध में गोजातीय की तुलना में कम प्रोटीन होता है, लेकिन मानव दूध के समान होता है। घोड़ी के दूध में 60:40 कैसिइनः मट्ठा प्रोटीन होता है। घोड़ी के दूध की अनूठी विशेषता मानव दूध जैसा दिखना है। घोड़ी का दूध अपने उच्च मट्ठा प्रोटीन और बहिर्जात अमीनो एसिड सामग्री के कारण गोजातीय दूध की तुलना में अधिक पोषक तत्व प्रदान करता है। घोड़ी के दूध में पाए जाने वाले कैसिइन के तीन प्राथमिक अंश अल्फा, बीटा और गामा हैं, और ये दूध में लगभग 46:45:8 के अनुपात में पाए जाते हैं। घोड़ी के दूध से प्राप्त प्रोटीन को पचने में लगभग दो घंटे लगते हैं। यह समय गाय के दूध में पाए जाने वाले प्रोटीन की

तुलना में काफी कम होता है। घोड़ी के दूध में गाय के दूध की तुलना में काफी कम कैसिइन होता है, जो कम पाचन समय के लिए जिम्मेदार है।

विटामिन

वसा में घुलनशील विटामिन (ए, डी, और ई) की एक समान संरचना घोड़ी के दूध में पाई जाती है, जो गोजातीय दूध में पाई जाती है। दूसरी ओर, गाय के दूध की तुलना में, घोड़ी के दूध में विटामिन–सी की काफी अधिक मात्रा होता है।

स्वास्थ्य के लिए घोड़ी का दूध

अरस्तू और हिप्पोक्रेट्स जैसे प्राचीन चिकित्सकों ने कहा कि घोड़ी का दूध स्वास्थ्य समस्याओं में मदद कर सकता है। वर्ष 1950 के दशक के उत्तरार्ध में यूरोप के विभिन्न भागों में अस्थमा जैसी पुरानी बीमारियों के इलाज के लिए इस दूध का उपयोग किया जाता था। हालाँकि, बाद में चिकित्सीय दूध के रूप में इसका उपयोग कम हो गया। हाल के वर्षों में कई अध्ययनों से पता चला है कि घोड़ी का दूध कई तरह की पुरानी बीमारियों के इलाज में मदद कर सकता है।

पाचन संबंधी उपचार

घोड़ी का दूध लाइसोजाइम का प्रचुर स्रोत है। यह एंजाइम आंतों के संक्रमण की प्रगति को रोक सकता है और दस्त को रोक सकता है। घोड़ी का दूध एक प्रीबायोटिक है, जो आंत में पहले से मौजूद बिफीडोबैक्टीरिया के विकास को प्रोत्साहित करके जठरांत्र संबंधी रोगों को रोकने में मदद करता है। घोड़ी के दूध में महत्वपूर्ण मात्रा में मैग्नीशियम होता है, जिसका उपयोग आंतों के विकारों जैसे चिड़चिड़ा आंत्र रोग के इलाज के लिए किया जाता है।

वैकल्पिक कैंसर चिकित्सा

घोड़ी का दूध बिफीडोबैक्टीरिया के विकास को प्रोत्साहित करता है, जो पाचन तंत्र में शॉर्ट चेन फैटी एसिड के स्तर को बढ़ाता है। ये शॉर्ट चेन फैटी एसिड

कोलन ट्यूमर के खिलाफ लड़ाई में बहुत प्रभावी साबित हुए हैं। घोड़ी का दूध सेरोटोनिन के उत्पादन को उत्तेजित करता है, जो कैंसर रोगियों को कीमोथेरेपी के नकारात्मक प्रभावों से बचाने में एक अत्यंत उपयोगी एजेंट के रूप में पाया गया है।

रक्त कोलेस्ट्रॉल के लिए उपाय

घोड़ी के दूध में ओमेगा 3 और ओमेगा 6 जैसे पॉली–अनसैचुरेटेड फैटी एसिड की उच्च मात्रा होती है, जो रक्त में कोलेस्ट्रॉल के स्तर को कम करने की दूध की क्षमता में योगदान करते हैं। घोड़ी के दूध में महत्वपूर्ण मात्रा में विटामिन ई होता है, जो रक्तप्रवाह में कोलेस्ट्रॉल और ट्राइग्लिसराइड्स के स्वस्थ स्तर के रखरखाव में योगदान देता है।

सौन्दर्य प्रसाधन

कई अलग–अलग अध्ययनों के अनुसार घोड़ी के दूध में त्वचा रोगों के रोगियों में घाव भरने का प्रभाव पाया गया है। इस वजह से घोड़ी के दूध का उपयोग विभिन्न प्रकार की क्रीम, बाम, मॉइस्चराइजर और लक्जरी साबुन के उत्पादन में किया जाता है। कई अध्ययनों से पता चला है कि शुष्क त्वचा से पीड़ित रोगी गाढ़े दूध का सेवन करने से बहुत अधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं। गाढ़े दूध का उपयोग त्वचा की गहरी परतों को हाइड्रेट करने में मदद करता है, जो बदले में त्वचा की स्थिति के लिए तेजी से राहत प्रदान करता है, जिसका इलाज करने की आवश्यकता होती है। ■

सलाह

बछड़े के जन्म के बाद पहले महत्वपूर्ण 24 घंटे

प्रस्तुतिः साभार

एक बछड़ा जिसकी पहले 24 घंटों में पर्याप्त देखभाल प्रदान नहीं की जाती है, वह बीमारियों का शिकार हो सकता है या हमेशा कमजोर और एक अंडर–परफॉर्मर रहेगा, भले ही उसमें अच्छी आनुवंशिक क्षमता हो और उसे एक अच्छा वातावरण प्रदान किया गया हो।

1. नाक और मुंह को साफ करें, जिससे बछड़े को बेहतर सांस लेने में मदद मिलती है और भविष्य में सांस लेने की समस्याओं को रोकने में मदद मिलती है।
2. मां को बछड़े को साफ चाटने दें, जो बछड़े के शरीर के भीतर परिसंचरण को बढ़ावा देता है और बछड़े को खड़े होने और चलने के लिए तैयार करता है।
3. नाभि–रज्जु को आधार से लगभग 2 इंच की दूरी पर साफ यंत्र से काटें।
4. कम से कम 30 सेकंड का न्यूनतम संपर्क समय सुनिश्चित करते हुए नाभि को 3.5% आयोडीन के घोल के उच्च टिंचर में डुबोएं (एक साधारण स्मियरिंग उद्देश्य की पूर्ति नहीं करेगा)।
5. खुले सिरे को बंद करने के लिए रस्सी के खुले सिरे को साफ धागे से बांध दें।
6. 12 घंटे के बाद नाभि डुबाना दोहराएं। खराब रखरखाव वाली नाभि गंभीर संक्रमण का प्रवेश द्वार है।
7. एक नवजात बछड़े को जन्म के पहले 2 घंटे के भीतर 2 लीटर कोलोस्ट्रम दिया जाना चाहिए और जन्म के 12 घंटे के भीतर 1–2 लीटर (आकार के आधार पर) दिया जाना चाहिए।

   एक बछड़े को उसके जीवन के पहले 3 महीनों तक बीमारियों से बचाने के लिए पर्याप्त मात्रा में कोलोस्ट्रम मिलना चाहिए। कोलोस्ट्रम बछड़े का ''जीवन का पासपोर्ट'' है।
8. इसलिए नवजात बछड़ों को हाथ से खिलाने की सिफारिश की जाती है, ताकि किसान एक बछड़े को प्राप्त होने वाले कोलोस्ट्रम की मात्रा के बारे में सुनिश्चित हो।
9. कृमि मुक्ति 10–14 दिनों की उम्र के भीतर बाद में मासिक आधार पर छठे महीने तक की जानी चाहिए।
10. जब पशु 6 माह का हो जाए तो टीकाकरण के लिए पशु चिकित्सक से संपर्क करें।

उपाय

स्वच्छ दूध उत्पादन से उत्तम डेरी उत्पाद

डॉ. राजेंद्र सिंह

वरिष्ठ विस्तार विशेषज्ञ (पशु विज्ञान),रोहतक

लाला लाजपतराय पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, हिसार

उत्तर भारत के मैदानी इलाकों में, विशेषतौर से पंजाब व हरियाणा में, पशुउत्पादन की दृष्टि से पशुधन सर्वोत्तम दर्जे का माना जाता है। उचित रखरखाव, देखभाल से हम अपने पशुओं को स्वच्छ रखकर स्वच्छता के साथ उत्पादन की बढ़वार को और भी अधिक बढ़ा सकते हैं। पशुओं का रखरखाव, स्वास्थ्य व स्वच्छता इस प्रकार से हो कि अनावश्यक रूप से जरूरी ऊर्जा का क्षय न हो। इस प्रकार स्वच्छ दूध उत्पादन का सीधा मतलब दूध से आमदनी है। अगर दूध साफ–सुथरा है तो आपको पैसा ज्यादा मिलेगा, अगर दूध साफ नहीं है तो आपका दूध कोई खरीदेगा नहीं। इसके लिए आपको पशु की बेहतर साफ–सफाई करनी चाहिए। आपका दूध निकालने का स्थान व बर्तन साफ–सुथरा होना चाहिए तथा जो व्यक्ति दूध निकालता है वह साफ–सुथरा व बीमार नहीं होना चाहिए। यदि पशु का शरीर, खासतौर से पीछे का हिस्सा, थन, लेवटी इत्यादि पर गोबर व पेशाब लगा है तो इसकी दुर्गंध दूध में अवश्य आयेगी तथा एक तो पीने वाले इस दूध को बिल्कुल भी पसंद नहीं करेंगे तथा दूसरा यह दूध लंबे समय तक ठीक भी नहीं रहेगा, अर्थात दूध जल्दी ही खराब हो जायेगा। इसके साथ–साथ हम स्वच्छ दूध से

उत्पाद बनाएंगे तो वो भी अव्वल दर्जे की गुणवत्ता वाले बनेगे। इसी प्रकार आपके पशु का स्थान व दूध निकालने वाला बर्तन साफ–सुथरे हैं तथा गंदगी रहित हैं तो आपको जरूर स्वच्छ दूध प्राप्त होगा तथा हमारे पास आंकड़े हैं कि साफ थन, लेवटी से निकला हुआ दूध लंबे समय तक खराब नहीं होता।

इसके बाद स्वच्छ दूध को मलमल के कपड़े से छानकर दूध को दूध की सहकारी सोसायटी में दे आएं। सोसायटी में बर्तन, दूध संग्रह, भंडारण आदि से जुड़े बर्तन/यंत्र, घर आदि की सफाई का भी विशेष ध्यान रखना स्वच्छ दूध उत्पादन में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसके लिए हम आपको एक बात और बताना चाहते हैं कि आमतौर पर गांव में खुली बाल्टी में दूध निकालते हैं। इसमें ज्यादा से ज्यादा धूल–मिट्टी, बाल, चारे के तिनके, अन्य चमड़ी से उतरे अवशेष व अन्य दूध को खराब करने वाले तत्व/कारक आसानी से दूध के अंदर चले जाते हैं। इसके स्थान पर गुम्बदवाली बाल्टी का दूध निकालने में प्रयोग करें। इसके बहुत फायदे हैं, क्योंकि इसके अंदर कम से कम दूध को खराब करने वाले तत्वों/कारकों का प्रवेश रुक जायेगा क्योंकि इस बाल्टी का ज्यादा हिस्सा ऊपर से ढका हुआ होता है। इसके साथ–साथ पशुपालकों को चाहिए कि पशुओं को सुगंध वाला हरा चारा तथा दाना दूध निकालने से दो–तीन घंटे पहले खिलायें। दूध निकालते समय शांत वातावरण के साथ केवल सन्तुलित आहार बाखर ही खिलायें, इसके बहुत फायदे हैं। इस विधि का प्रयोग करने पर आपको स्वयं परिवर्तन महसूस होगा। दूध दुहने के समय पशु के पिछले हिस्से, अयन और थनों की भली प्रकार से सफाई करें। अयन और थन धोने के लिए साफ पानी का उपयोग करें। दूध दुहने वाला व्यक्ति पूर्णतया स्वच्छ व स्वस्थ हो तथा उसके हाथ व उंगलियों पर किसी तरह का घाव न हो। पशुघर में मलमूत्र की निकासी का सुनियोजित ढंग से प्रबंध करें तथा दुहने के समय गोबर से बचाव करें। पशुघर में मक्खियों के आने से रोकने के लिए उचित प्रबंध करें। दूध उत्पादन में स्वच्छ जल व बर्तनों का इस्तेमाल करें। दूध दुहने के बाद, वितरण के दौरान ठण्डा रखें, जिससे उसमें जीवाणुओं की संख्या में वृद्धि न होने पाए। कच्चे दूध को उंगली डालकर न चखें। दूध को ठीक समय पर गर्म करें तथा ठंडा होने तक ढक कर रखें व दूध को उबाल कर सेवन करें।

यदि स्वच्छ दूध उत्पादन नहीं किया जाता है तो दूध से मनुष्य के अंदर विभिन्न रोग हो सकते हैं जैसे क्षय रोग, माल्टा बुखार, पीलिया, क्यू–फीवर, डिफ्थीरिया, स्कारलेट ज्वर, पोलियो एवं माइकोटोक्सीकोसिस आदि।

देखभाल के साथ–साथ व्यंजन के माध्यम से ज्यादा लाभ

पशु का दूध हमेशा पूर्ण हस्त विधि अर्थात पूरे हाथ के बीच थन को लेकर प्यार से दबाकर दूध निकालना चाहिए। लेकिन हमारे पशुपालक भाई ज्यादातर अंगूठा दबाकर दूध निकालते हैं जो गलत है, क्योंकि इससे पशु के थन पर गांठे पड़ जाती हैं तथा थनैला रोग हो जाता है। दूध निकालने वाला आदमी बीमार नहीं होना चाहिए तथा दूध निकालते वक्त पशु के चारों तरफ शांत वातावरण होना चाहिए। रोगों से बचाव करना इलाज से बेहतर है। इसलिए पशुओं को मुंह–खुर, गलघोंटू, शीतलामाता आदि से बचाव के लिए टीके अवश्य लगवाएं। दस्त लगने व थनैला होने पर हमारे लाला लाजपतराय पशु चिकित्सक एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, हिसार की रोहतक स्थित प्रयोगशाला में गोबर व दूध की जांच करवाकर पशु चिकित्सक से इलाज कराएं। यदि हम ऊपर लिखी इन बातों पर ध्यान देंगे तो पशुओं से अच्छा दूध–उत्पादन ले सकते हैं। इस प्रकार स्वच्छ उत्पादन करके हमें इस दूध से व्यंजन जैसे छेना, रसगुल्ला, छेना खीर, छेना मुर्की, रसमलाई, पनीर, गुलाब जामुन, कलाकंद, आईसक्रीम व मटका कुल्फी आदि बना सकते है तथा दूध की कीमत से कई गुणा ज्यादा लाभ कमा सकते है। डेरी में स्वच्छता संबंधी मानकों का पालन अनिवार्य रूप से करना चाहिए। ■

कहानी

रामा

– महादेवी वर्मा

'रामा हमारे यहाँ कब आया, यह न मैं बता सकती हूँ और न मेरे भाई–बहिन। बचपन में जिस प्रकार हम बाबूजी की विविधता भरी मेज से परिचित थे, जिसके नीचे दोपहर के सन्नाटे में हमारे खिलौनों की सृष्टि बसती थी, अपने लोहे के स्प्रिंगदार विशाल पलँग को जानते थे, जिस पर सोकर हम कच्छ–मत्स्यावतार जैसे लगते थे और माँ के शंख–घड़ियाल से घिरे ठाकुरजी को पहचानते थे, जिनका भोग अपने मुँह अन्तर्धान कर लेने के प्रयत्न में हम आधी आँखें मींचकर बगुले के मनोयोग से घंटी की टन–टन गिनते थे, उसी प्रकार नाटे, काले और गठे शरीर वाले रामा के बड़े नखों से लम्बी शिखा तक हमारा सनातन परिचय था।

साँप के पेट जैसी सफेद हथेली और पेड़ की टेढ़ी–मेढ़ी गाँठदार टहनियों जैसी उँगलियों वाले हाथ की रेखा–रेखा हमारी जानी–बूझी थी, क्योंकि मुँह धोने से लेकर सोने के समय तक हमारा उससे जो विग्रह चलता रहता था, उसकी स्थायी संधि केवल कहानी सुनते समय होती थी। दस भिन्न दिशाएँ खोजती हुई उँगलियों के बिखरे कुटुम्ब को बड़े–बूढ़े के समान सँभाले हुए काले स्थूल पैरों की आहट तक हम जान गए थे, क्योंकि कोई नटखटपन करके हौले से भागने पर भी वे मानो पंख लगाकर हमारे छिपने के स्थान में जा पहुँचते थे।

शैशव की स्मृतियों में एक विचित्रता है। जब हमारी भावप्रणवता गम्भीर और प्रशान्त होती है, तब अतीत की रेखाएँ कुहरे में से स्पष्ट होती हुई वस्तुओं के समान अनायास ही स्पष्ट–से–स्पष्टतर होने लगती हैं। पर जिस समय हम तर्क से उनकी उपयोगिता सिद्ध करके स्मरण करने बैठते हैं, उस समय पत्थर फेंकने से हटकर मिल जाने वाली, पानी की काई के समान विस्मृति उन्हें फिर–फिर ढक लेती है।

रामा के संकीर्ण माथे पर की खूब घनी भौहें और छोटी–छोटी स्नेहतरल आँखें कभी–कभी स्मृति–पट पर अंकित हो जाती हैं और कभी धुँधली होते–होते एकदम खो जाती हैं। किसी थके झुँझलाए शिल्पी की अन्तिम भूल जैसी अनगढ़ मोटी नाक, साँस के प्रवाह से फैले हुए–से–नथुने, मुक्त हँसी से भरकर फूले हुए–से ओठ तथा काले पत्थर की प्याली में दही की याद दिलाने वाली सघन और सफेद दन्त–पंक्ति के सम्बन्ध में भी वही सत्य है।

रामा के बालों को तो आध इंच अधिक बढ़ने का अधिकार ही नहीं था, इसीसे उसकी लम्बी शिखा को साम्य की दीक्षा देने के लिए हम कैंची लिए घूमते रहते थे। पर वह शिखा तो म्याऊँ का ठौर थी, क्योंकि न तो उसका स्वामी हमारे जागते हुए सोता था और न उसके जागते हुए हम ऐसे सदनुष्ठान का साहस कर सकते थे।

कदाचित् आज कहना होगा कि रामा कुरूप था। परन्तु तब उससे भव्य साथी की कल्पना भी हमें असह्य थी।

वास्तव में जीवन सौन्दर्य की आत्मा है। पर वह सामंजस्य की रेखाओं जितनी मूर्तिमत्ता पाता है, उतनी विषमता में नहीं। जैसे–जैसे हम बाह्य रूपों की विविधता में उलझते जाते हैं, वैसे–वैसे उनके मूलगत जीवन को भूलते जाते हैं। बालक स्थूल विविधता से विशेष परिचित नहीं होता, इसी से वह केवल जीवन को पहचानता है। जहाँ से जीवन से स्नेह–सद्भाव की किरणें फूटती जान पड़ती हैं, वहाँ वह व्यक्ति विषम रेखाओं की उपेक्षा कर डालता है और जहाँ द्वेष, घृणा आदि के धूम से जीवन ढका रहता है, वहाँ वह सामंजस्य को भी ग्रहण नहीं करता।

इसी से रामा हमें बहुत अच्छा लगता था। जान पड़ता है, उसे भी अपनी कुरूपता का पता नहीं था, तभी तो

केवल एक मिर्जई और घुटनों तक ऊँची धोती पहनकर अपनी कुडौलता के अधिकांश की प्रदर्शनी करता रहता था। उसके पास सजने के उपयुक्त सामग्री का अभाव नहीं था, क्योंकि कोठरी में अस्तर लगा लम्बा कुरता, बँधा हुआ साफा, बुन्देलखंडी जूते और गँठीली लाठी किसी शुभ मुहूर्त की प्रतीक्षा करते जान पड़ते थे। उनकी अखण्ड प्रतीक्षा और रामा की अटूट उपेक्षा से द्रवित होकर ही कदाचित् हमारी कार्यकारिणी समिति में यह प्रस्ताव नित्य सर्वमत से पास होता रहता था कि कुरते की बाँहों में लाठी को अटकाकर खिलौनों का परदा बनाया जावे, डलिया जैसे साफे को खूँटी से उतारकर उसे गुड़ियों का हिंडोला बनने का सम्मान दिया जावे और बुन्देलखंडी जूतों को हौज में डालकर गुड्डों के जल–विहार का स्थायी प्रबन्ध किया जावे। पर रामा अपने अँधेरे दुर्ग में चर्रमर्र स्वर में डांटते हुए द्वार को इतनी ऊँची अर्गला से बन्द रखता था कि हम स्टूल पर खड़े होकर भी छापा न मार सकते थे।

रामा के आगमन की जो कथा हम बड़े होकर सुन सके, वह भी उसी के समान विचित्र है। एक दिन जब दोपहर को माँ बड़ी, पापड़ आदि के अक्षय–कोष को धूप दिखा रही थीं, तब न जाने कब दुर्बल और क्लान्त रामा आँगन के द्वार की देहली पर बैठकर किवाड़ से सिर टिकाकर निश्चेष्ट हो रहा। उसे भिखारी समझ जब उन्होंने निकट जाकर प्रश्न किया, तब वह 'ए मताई, ए रामा तो भूखन के मारे जो चलो' कहता हुआ उनके पैरों पर लेट गया। दूध, मिठाई आदि का रसायन देकर माँ जब रामा को पुनर्जीवन दे चुकीं, तब समस्या और जटिल हो गई, क्योंकि भूख तो ऐसा रोग नहीं, जिसमें उपचार का क्रम टूट सके। वह बुन्देलखंड का ग्रामीण बालक विमाता के अत्याचार से भागकर माँगता–खाता इन्दौर तक जा पहुँचा था, जहाँ न कोई अपना था और न रहने का ठिकाना। ऐसी स्थिति में रामा यदि माँ की ममता का सहज ही अधिकारी बन बैठा, तो आश्चर्य क्या !

उस दिन सन्ध्या समय जब बाबूजी लौटे, तब लकड़ी रखने की कोठरी के एक कोने में रामा के बड़े–बड़े जूते विश्राम कर रहे थे और दूसरे में लम्बी लाठी समाधिस्थ थी। और हाथ–मुँह धेकर नये सेवा–व्रत में दीक्षित रामा हक्का–बक्का–सा अपने कर्तव्य का अर्थ और सीमा समझने में लगा हुआ था।

बाबूजी तो उसके अपरूप को देखकर विस्मय–विमुग्ध हो गये। हँसते–हँसते पूछा–यह किस लोक का जीव ले आए हैं धर्मराज जी ! माँ के कारण हमारा घर अच्छा–खासा 'जू' बना रहता था। बाबूजी जब लौटते, तब प्रायः कोई लँगड़ा भिखारी बाहर के दालान में भोजन करता रहता, कभी कोई सूरदास पिछवाड़े के द्वार पर खँजड़ी बजाकर भजन सुनाता होता, कभी पड़ोस का कोई दरिद्र बालक नया कुरता पहनकर आँगन में चौकड़ी भरता दिखाई देता और कभी कोई वृद्ध ब्राह्मणी भंडारघर की देहली पर सीधा गठियाते मिलती।

बाबूजी ने माँ के किसी कार्य के प्रति कभी कोई विरक्ति नहीं प्रकट की। पर उन्हें चिढ़ाने में सुख का अनुभव करते थे।

रामा को भी उन्होंने क्षण भर का अतिथि समझा, पर माँ शीघ्रता में कोई उत्तर न खोज पाने के कारण बहुत उद्विग्न होकर कह उठीं, मैंने खास अपने लिए इसे नौकर रख लिया है। जो व्यक्ति कई नौकरों के रहते हुए भी क्षण भर विश्राम नहीं करता, वह केवल अपने लिए नौकर रखे, यही कम आश्चर्य की बात नहीं, उस पर ऐसा विचित्र नौकर। बाबूजी का हँसते–हँसते बुरा हाल हो गया। विनोद से कहा––'ठीक ही है, नास्तिक जिनसे डर जावें, ऐसे खास साँचे में ढले सेवक ही तो धर्मराजजी की सेवा में रह सकते हैं।'

उन्हें अज्ञातकुलशील रामा पर विश्वास नहीं हुआ। पर माँ से तर्क करना व्यर्थ होता, क्योंकि वे किसी की पात्रता–अपात्रता का मापदण्ड अपनी सहज–संवेदना ही को मानती थीं। रामा की कुरूपता का आवरण भेदकर उनकी सहानुभूति ने जिस सरल हृदय को परख लिया, उसमें अक्षय सौंदर्य न होगा, ऐसा सन्देह उनके लिए असम्भव था।

इस प्रकार रामा हमारे यहाँ रह गया, पर उसका कर्तव्य निश्चित करने की समस्या नहीं सुलझी।

सब कामों के लिए पुराने नौकर थे और अपने पूजा और रसोईघर का कार्य माँ किसी को सौंप ही नहीं सकती

थीं। आरती, पूजा आदि के सम्बन्ध में उनका नियम जैसा निश्चित और अपवादहीन था, भोजन बनाने के सम्बन्ध में उससे कम नहीं।

एक ओर यदि उन्हें विश्वास था कि उपासना उनकी आत्मा के लिए अनिवार्य है, तो दूसरी ओर दृढ़ धारणा थी कि उनका स्वयं भोजन बनाना हम सबके शरीर के लिए नितान्त आवश्यक है। हम सब एक–दूसरे से दो–दो वर्ष छोटे–बड़े थे, अतः हमारे अबोध और समझदार होने के समय में विशेष अन्तर नहीं रहा। निरन्तर यज्ञ–ध्वंस में लगे दानवों के समान हम माँ के सभी महान् अनुष्ठानों में बाधा डालने की ताक में मँडराते रहते थे, इसी से रामा को, हम विद्रोहियों को वश में रखने का गुरु–कर्तव्य सौंपकर कुछ निश्चिन्त हो सकीं।

रामा सवेरे ही पूजा–घर साफ कर वहाँ के बर्तनों को नींबू से चमका देता, तब वह हमें उठाने जाता। उस बड़े पलँग पर सवेरे तक हमारे सिर–पैर की दिशा और स्थितियों में न जाने कितने उलट–फेर हो चुकते थे। किसी की गर्दन को किसी का पाँव नापता रहता था, किसी के हाथ पर किसी का सर्वांग तुलता होता था और किसी की साँस रोकने के लिए किसी की पीठ की दीवार बनी मिलती थी। सब परिस्थितियों का ठीक–ठीक ज्ञान प्राप्त करने के लिए रामा का कठोर हाथ कोमलता से छद्मवेश में, रजाई या चादर पर एक छोर से दूसरे छोर तक घूम आता था और तब वह किसी को गोद के रथ, किसी को कंदे के घोड़ी पर तथा किसी को पैदल ही, मुख–प्रक्षालन जैसे समारोह के लिए ले जाता।

हमारा मुँह–हाथ धुलाना कोई सहज अनुष्ठान नहीं था, क्योंकि रामा को 'दूध बताशा राजा खाय' का महामन्त्र तो लगातार जपना ही पड़ता था, साथ ही हम एक–दूसरे का राजा बनना भी स्वीकार नहीं करना चाहते थे। रामा जब मुझे राजा कहता, तब नन्हें बाबू चिड़िया की चोंच जैसा मुँह खोलकर बोल उठता––'लामा इन्हें कौं लाजा कहते हो ?' र कहने में भी असमर्थ उस छोटे पुरुष का दम्भ कदाचित् मुझे बहुत अस्थिर कर देता था। रामा के एक हाथ की चक्रव्यूह जैसी उँगलियों में मेरा सिर अटका रहता था और उसके दूसरे हाथ की तीन गहरी रेखाओं वाली हथेली सुदर्शनचक्र के समान मेरे मुख पर मलिनता की खोज में घूमती रहती थी। इतना कष्ट सहकर भी दूसरों को राजत्व का अधिकारी मानना अपनी असमर्थता का ढिंढोरा पीटना था, इसी से मैं साम–दाम–दण्ड–भेद के द्वारा रामा को बाध्य कर देती कि वह केवल मुझी को राजा कहे। रामा ऐसे महारथियों को सन्तुष्ट करने का अमोघ मन्त्र जानता था। वह मेरे कान में हौले से कहता––'तुमई बड्डे राजा हौ जू, नन्हें नइयाँ' और कदाचित् यही नन्हें के कान में दोहराया जाता, क्योंकि वह उत्फुल्ल होकर मंजन की डिबिया में नन्हीं उँगली डालकर दातों के स्थान में ओठ माँजने लगता। ऐसे काम के लिए रामा का घोर निषेध था, इसी से मैं उसे गर्व से देखती। मानो वह सेनापति की आज्ञा का उल्लंघन करने वाला मूर्ख सैनिक हो।

तब हम तीनों मूर्तियाँ एक पंक्ति में प्रतिष्ठित कर दी जातीं और रामा बड़े–बड़े चम्मच, दूध का प्याला, फलों की तश्तरी आदि लेकर ऐसे विचित्र और अपनी–अपनी श्रेष्ठता प्रमाणित करने के लिए व्याकुल देवताओं की अर्चना के लिए सामने आ बैठता। पर वह था बड़ा घाघ पुजारी। न जाने किस साधना के बल से देवताओं को आँख मूंदकर कौव्वे द्वारा पुजापा पाने को उत्सुक कर देता। जैसे ही हम आँखें मूँदते वैसे ही किसी के मुँह में अंगूर, किसी के दांतों में बिस्कुट और किसी के ओठों में दूध का चम्मच जा पहुंचता। न देखने का तो अभिनय ही था, क्योंकि हम सभी अधखुली आँखों से रामा की काली, मोटी उँगलियों की कलाबाजी देखते ही रहते थे। और सच तो यह है कि मुझे कौवे की काली कठोर और अपरिचित चोंच से भय लगता था। यदि कुछ खुली आँखों से मैं काल्पनिक कौव्वे और उसकी चोंच से रामा के हाथ और उँगलियों को न पहचान लेती तो मेरा भोग का लालच छोड़कर उठ भागना अवश्यम्भावी था।

जलपान का विधान समाप्त होते ही रामा की तपस्या की इति नहीं हो जाती थी। नहाते समय आँख को साबुन के फेन से तरंगित और कान को सूखा द्वीप बनने से बचाना, कपड़े पहनते समय उनके उलटे–सीधे रूपों में अतर्क वर्ण–व्यवस्था बनाये रहना, खाते समय भोजन की मात्रा और भोक्ता की सीमा में अन्याय न होने देना, खेलते

समय यथावश्यकता हमारे हाथी, घोड़ा, उड़नखटोला आदि के अभाव को दूर करना और सोते समय हम पर पंख जैसे हाथों को फैलाकर कथा सुनाते–सुनाते हमें स्वप्न–लोक के द्वार तक पहुँचा आना रामा का ही कर्तव्य था।

हम पर रामा की ममता जितनी अथाह थी, उस पर हमारा अत्याचार भी उतना ही सीमाहीन था। एक दिन दशहरे का मेला देखने का हठ करने पर रामा बहुत अनुनय–विनय के उपरान्त माँ से, हमें कुछ देर के लिए ले जाने की अनुमति पा सका। खिलौने खरीदने के लिए जब उसने एक को कंधे पर बैठाया और दूसरे को गोद लिया, तब मुझे उँगली पकड़ाते हुए बार–बार कहा, उँगरिया जिन छोड़ियो राजा भइया।' सिर हिलाकर स्वीकृति देते–देते ही मैंने उँगली छोड़कर मेला देखने का निश्चय कर लिया। भटकते–भटकते और दबने से बचते–बचते जब मुझे भूख लगी, तब रामा का स्मरण आना स्वाभाविक था। एक मिठाई की दूकान पर खड़े होकर मैंने यथासम्भव उद्विग्नता छिपाते हुए प्रश्न किया–'क्या तुमने रामा को देखा है? वह खो गया है।' बूढ़े हलवाई ने धुँधली आँखों में वात्सल्य भरकर पूछा–'कैसा है तुम्हारा रामा?' मैंने ओठ दबाकर सन्तोष के साथ कहा–'बहुत अच्छा है।' इस हुलिया से रामा को पहचान लेना कितना असम्भव था, यह जानकर ही कदाचित् वृद्ध कुछ देर वहीं विश्राम कर लेने के लिए आग्रह करने लगा। मैं हार तो मानना नहीं चाहती थी, परन्तु पाँव थक चुके थे और मिठाइयों से सजे थालों में कुछ कम निमन्त्रण नहीं था, इसी से दूकान के एक कोने में बिछे ठाट पर सम्मान्य अतिथि की मुद्रा में बैठकर मैं बूढ़े से मिले मिठाई रूपी अर्घ्य को स्वीकार करते हुए उसे अपनी महान यात्रा की कथा सुनाने लगी।

वहां मुझे ढूँढते–ढूँढते रामा के प्राण कण्ठगत हो रहे थे। सन्ध्या समय जब सबसे पूछते–पूछते बड़ी कठिनाई से रामा उस दुकान के सामने पहुँचा, तब मैंने विजय गर्व से फूलकर कहा–'तुम इतने बड़े होकर भी खो जाते हो रामा!' रामा के कुम्हलाए मुख पर ओस के बिन्दु जैसे आनन्द के आँसू लुढ़क पड़े। वह मुझे घुमा–घुमाकर इस तरह देखने लगा, मानों मेरा कोई अंग मेले में छूट गया हो। घर लौटने पर पता चला कि बड़ों के कोश में छोटों की ऐसी वीरता का नाम अपराध है, पर मेरे अपराध को अपने ऊपर लेकर डाँट–फटकार भी रामा ने ही सही और हम सबको सुलाते समय उसकी वात्सल्यता भरी थपकियों का विशेष लक्ष्य भी मैं ही रही।

एक बार अपनी और पराई वस्तु का सूक्ष्म और गूढ़ अन्तर स्पष्ट करने के लिए रामा चतुर भाष्यकार बना। बस फिर क्या था! वहाँ से कौन–सी पराई चीज लाकर रामा की छोटी आँखों को निराश विस्मय से लबालब भर दें, इसी चिन्ता में हमारे मस्तिष्क एकबारगी क्रियाशील हो उठे।

हमारे घर से एक ठाकुर साहब का घर कुछ इस तरह मिला हुआ था कि एक छत से दूसरी छत तक पहुँचा जा सकता था–हाँ, राह एक बालिश्त चौड़ी मुँडेर मात्र थी, जहाँ से पैर फिसलने पर पाताल नाप लेना सहज हो जाता।

उस घर आँगन में लगे फूल, पराई वस्तु की परिभाषा में आ सकते हैं, यह निश्चित कर लेने के उपरान्त हम लोग एक दोपहर को, केवल रामा को खिझाने के लिए उस आकाश मार्ग से फूल चुराने चले। किसी का भी पैर फिसल जाता तो कथा और ही होती, पर भाग्य से हम दूसरी छत तक सकुशल पहुँच गये। नीचे के जीने की अन्तिम सीढ़ी पर एक कुत्ती नन्हें–नन्हें बच्चे लिए बैठी थी। जिन्हें देखते ही, हमें वस्तु के सम्बन्ध में अपना निश्चय बदलना पड़ा। पर ज्योंही हमने एक पिल्ला उठाया, त्योंही वह निरीह–सी माता अपने इच्छा भरे अधिकार की घोषणा से धरती आकाश एक करने लगी। बैठक से जब कुछ अस्त–व्यस्त भाववाले गृहस्वामी निकल आये और शयनागार से जब आलस्यभरी गृहस्वामिनी दौड़ पड़ी, तब हम बड़े असमंजस में पड़ गए। ऐसी स्थिति में क्या किया जाता है, यह तो रामा के व्याख्यान में था ही नहीं, अतः हमने अपनी बुद्धि का सहारा लेकर सारा मन्तव्य प्रकट कर दिया, कहा– 'हम छत की राह से फूल चुराने आए हैं।' गृहस्वामी हँस पड़े। पूछा––'लेते क्यों नहीं ?' उत्तर और भी गम्भीर मिला––'अब कुत्ती का पिल्ला चुरायेंगे।' पिल्ले को दबाये हुए जब तक हम उचित मार्ग से लौटे तब तक रामा ने हमारी डकैती का पता लगा लिया था। ■

दुग्ध सरिता में विज्ञापन दें, लाभ बढ़ाएं

RATE CARD — DUGDH SARITA

Position	Rate per insertion	Inaugural Offer
	Rs.	Rs.
Back Cover (Four Colours)*	18,000	12,000
Inside Front Cover (Four Colours)	14,400	10,000
Inside Back Cover (Four Colours)	14,400	10,000
Inside Right Page (Four Colours)	10,800	7,000
Inside Left Page (Four Colours)	9,600	6,000
Facing Spread (Four Colours)	16,800	11,000
Half Page (Four Colours)	5400	4000

* Fifth colour: extra charges will be levied. **Note: GST 5% will be applicable on the above tariff.**

TECHNICAL DETAILS

Magazine Size in cm — **Height :** 26.5 cm; **Width:** 20.5 cm
Please leave 1 cm space from all side i.e. top-bottom-left and right. For bleed size artwork, please provide 1 cm bleed from all side over and above given size of the magazine.

Terms and Conditions

- Indian Dairy Association reserves the exclusive right to reject any advertisement, whether or not the same has already been acknowledged and/or previously published.
- The advertisement material should reach the IDA House on or before the informed deadline date.
- Cancellation of advertisements is not accepted after the booking deadline has expired.
- The Association will not be liable for any error in the advertisement.
- The Association reserves the right to destroy all material after a period of 45 days from the date of issue of the last advertisement.

Artwork

The ad material may be sent through email on the ID: **ida.adv@gmail.com** in PDF & JPG **OR** CDR & JPG format only. All four colour scan should be saved as CMYK not RGB. Processing charges would be borne by the advertiser as per actuals.

Mode of Payment

100% Advance. Payment should be made through Bank Draft payable at New Delhi / Cheque payable at par / NEFT in favour of the "Indian Dairy Association" along with the Release Order. Bank details are as follows: ***Name:*** *Indian Dairy Association;* ***SB a/c No:*** *90562170000024;* ***IFSC:*** *CNRB0019009;* ***Bank:*** *Canara Bank;* ***Branch Address:*** *Delhi Tamil Sangam Building, Sector – V, R.K. Puram New Delhi.*

Contact for Ads
Mr. Narendra Kumar Pandey
Sr. Executive-Publications. Ph. (Direct): 011-26179783 M.: 9891147083

Indian Dairy Association
IDA House, Sector-IV, R.K. Puram, New Delhi-110 022
Ph.: 91-11-26165355, 26170781, 26165237
E-mail: ida.adv@gmail.com Web: www.indairyasso.org

जेम फर्टिकिट

बांझपन से प्रजनन क्षमता तक

सुनिश्चित करता है

अधिकत्तम

दूग्ध उत्पादन प्रत्येक ब्यांत में

एवं हर साल एक बछड़ा/बछिया

आयुर्वेट लिमिटेड

कॉरपोरेट कार्यालय: यूनिट नं. 101-103, प्रथम तल, के.एम. ट्रेड टावर, प्लाट नं. एच-3, सेक्टर-14, कौशांबी, गाजियाबाद-201010 (उ.प्र.)
दूरभाष: +91-120-7100201 फैक्स: +91-120-7100202
ई-मेल: customercare@ayurvet.com वेब: www.ayurvet.com
सीआईएन सं.: U74899DL1992PLC050587

रजिस्टर्ड ऑफिस: चौथी मंजिल, सागर प्लाज़ा, डिस्ट्रिक्ट सेन्टर, लक्ष्मी नगर, विकास मार्ग, नई दिल्ली-110092

पारंपरिक ज्ञान
आधुनिक अनुसंधान

RNI No.: DELHIN/2017/74023

Amul
The Taste of India

अमूल दूध पीता है इंडिया

अमूल
दूध

एशिया का सबसे बड़ा मिल्क ब्रांड

खुला दूध सेहत के लिए हानिकारक हो सकता है. अमूल आपके लिए लाते हैं पाश्चराइज़्ड पाउच दूध.
यह शुद्ध और विटामिन्स से भरपूर होता है. इसे अत्याधुनिक मशीनों की मदद से पैक किया जाता है,
इसलिए यह इंसानी हाथों से अनछुआ रहता है. अधिक जानकारी के लिए कृपया संपर्क करें 011-28524336/37.

Follow us: /amul.coop | /amul coop | /amultv | /amul india | Visit us at http://www.amul.com

11430665HIN

प्रकाशक व मुद्रक ज्ञान प्रकाश वर्मा द्वारा, इंडियन डेयरी एसोसिएशन के लिए रॉयल आफसेट,
ए–89/1, फेज–1, नारायणा इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली से मुद्रित व इंडियन डेयरी एसोसिएशन,
आईडीए हाऊस, सेक्टर–4, आर. के. पुरम, नई दिल्ली – 110022 से प्रकाशित, सम्पादक – जगदीप सक्सेना